वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

नवम्बर 16-30, 2025

हिन्दू विश्व

हिंदू धर्म की रक्षा ही जिनका व्रत था

श्री गुरु तेगबहादुर जी

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

काशी प्रांत की प्रांत धर्मप्रसार प्रमुखों की बैठक में प्रांतीय पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के साथ उपस्थित धर्मप्रसार के अ.भा. प्रमुख श्री सुधांशुमोहन पटनायक जी

हरिद्वार में कारसेवकों की स्मृति में बजरंग दल हरिद्वार द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में उपस्थित विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री आनंद हरबोला जी व प्रांत संगठन मंत्री श्री अजय नागर जी

मध्यभारत प्रान्त के जिला गंज बासौदा के लटेरी प्रखंड में भव्य गोपाष्टमी और नवीन गोशाला के लोकार्पण अवसर पर संबोधित करते विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री जितेन्द्र पंवार जी

इस पक्ष में ....

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे तेजस्वी ! हमें तेजयुक्त करें। हे वीर्यवान् ! हमे पराक्रमी बनाएँ। हे बलशाली ! हमें बलवान् बनाएँ । हे ओजस्वी! हमें ओजवान् बनाएँ। हे मन्युरूप! हमें अनीति प्रतिरोध की क्षमता प्रदान करें। हे संघर्षशील ! आक्रमणकारियों को प्रत्युत्तर देने में समर्थ, हमें संघर्ष की क्षमता दें। – यजुर्वेद

16-30 नवम्बर, 2025
मार्ग शीर्ष कृष्ण - शुक्ल पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

05 350वें बलिदान दिवस पर श्री गुरु तेगबहादुर जी को शत शत नमन!

श्री गुरु तेग बहादुर जी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	07
श्री गुरु तेग बहादुर जी : सत्य, साहस और करुणा के प्रतीक	08
मध्यभारत प्रांत के गंजबासौदा में गोपाष्टमी महोत्सव कार्यक्रम	10
संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर माओवाद का समापन	11
भारत में बढ़ता जनसँख्या असंतुलन	13
क्रांतिवीर सूर्य टंट्या भील	15
कारसेवकों की स्मृति में बजरंग दल हरिद्वार द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर ...	16
वासुबारस : विभिन्न शोध देसी गाय के महत्व को कैसे दर्शाते हैं	17
अंकुरम् : गर्भ में संस्कार की पाठशाला का अनूठा अभियान	19
सनातनी परंपरा की वाहक व संरक्षक जनजातीय सँस्कृति	21
अमरकंटक (मध्य प्रदेश) में अखिल भारतीय युवा संत चिंतन वर्ग का आयोजन	23
आयु एवं आयुर्वेद की परिभाषा	24
हुतात्मा दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन	25
हिंदू हेरिटेज सेंटर में दीपावली उत्सव का आयोजन	26

सुभाषित

भवत्यरूपोपि हि दर्शनीयः, स्वलंकृतः श्रेष्ठतमैर्गुणैः स्वैः।
दोषैः परीतो मालिनीकरैस्तु, सुदर्शनीयोपि विरूप एव।।

अपने श्रेष्ठ गुणों से अलंकृत होकर कुरूप मनुष्य भी दर्शनीय हो जाता है, किन्तु गन्दे दोषों से व्याप्त होकर रूपवान मनुष्य भी कुरूप हो जाता है।

सामाजिक सद्भाव और प्रकृति के साथ सहअस्तित्व

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

भारतीय सभ्यता के हजारों वर्षों के विकासक्रम में दो मूल विचार सदैव उसकी आत्मा के केंद्र में रहे हैं–सामाजिक सद्भाव और प्रकृति के साथ सहअस्तित्व। इन दोनों का संबंध इतना घनिष्ठ है कि समाज और प्रकृति, व्यक्ति और सृष्टि, मनुष्य और पर्यावरण – सब एक ही चेतना के विस्तार के रूप में देखे गए हैं। इसीलिए वेदों से लेकर उपनिषदों तक, और स्मृतियों से लेकर लोकाचार तक, हर स्तर पर भारतीय चिंतन इन दोनों को धर्म का अंग मानता रहा है। परंतु आधुनिक काल में, जब पश्चिमी भौतिकतावादी दृष्टिकोण ने समाज में विभाजन और प्रकृति में दोहन की प्रवृत्ति पैदा की, तब यह आवश्यक हो गया है कि हम पुनः भारतीय विमर्शों की स्थापना करें–ऐसे विमर्श जो न केवल मनुष्यों के बीच सद्भाव लाएँ, बल्कि समस्त जीव–जगत के साथ संतुलन की चेतना भी जगाएँ।

भारतीय दृष्टि में मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका सहचर है। पृथ्वी को माता और मानव को उसका पुत्र माना गया। यह भाव केवल काव्य नहीं, बल्कि जीवन का मूल है। हमारे ग्रंथों में जल, वायु, अग्नि, सूर्य, चंद्र, पर्वत और वृक्ष–सभी के प्रति आदर और कृतज्ञता का भाव प्रकट किया गया है। यह दृष्टिकोण सिखाता है कि प्रकृति का उपयोग 'उपभोग' के रूप में नहीं, बल्कि 'उपकार' के रूप में किया जाना चाहिए। इसीलिए भारत का पर्यावरण–दर्शन हमेशा संरक्षण, संतुलन और सहअस्तित्व पर आधारित रहा है।

सामाजिक सद्भाव की जड़ें भी इसी दृष्टि में हैं। यहाँ समाज जाति, भाषा, धर्म या क्षेत्र से नहीं, बल्कि आत्मीयता से बनता है। भारतीय संस्कृति ने सदैव यह सिखाया कि सारा विश्व एक परिवार है और प्रत्येक व्यक्ति उस परिवार का अंग। यह दृष्टि केवल नारा नहीं, बल्कि भारतीय जीवन–पद्धति का आधार है। जब तक समाज में यह भाव जीवित रहता है, तब तक संघर्ष नहीं होते। जब यह भाव समाप्त होता है, तब विभाजन, असमानता और हिंसा जन्म लेते हैं।

आज का युग भौतिक प्रगति का युग है, परंतु इसी के साथ सामाजिक विघटन और पर्यावरणीय असंतुलन भी बढ़ा है। शहरीकरण, उपभोक्तावाद और तकनीकी निर्भरता ने मनुष्य को आत्मकेंद्रित बना दिया है। परिणामस्वरूप प्रकृति को दोहने और समाज को बाँटने की प्रवृत्तियाँ गहराई से जड़ पकड़ चुकी हैं। पाश्चात्य चिंतन में समाधान कानूनों और तकनीकी सुधारों में खोजा जाता है, पर भारतीय विमर्श यह मानता है कि मूल कारण मनुष्य की दृष्टि है। जब तक दृष्टि में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक किसी भी नीति या नियम से स्थायी समाधान नहीं मिलेगा।

श्रीअरविंदो ने कहा था कि विश्व का संकट मूलतः आध्यात्मिक संकट है। जब मनुष्य स्वयं को प्रकृति और समाज से पृथक मानता है, तब विनाश आरंभ होता है। इसलिए आज आवश्यक है कि हम भारतीय विमर्शों की पुनः स्थापना करें। इसका अर्थ है–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्म, कर्तव्य और समरसता को पुनः केंद्र में लाना। शिक्षा में पर्यावरणीय संस्कार और सर्वजन हिताय की भावना को स्थान मिलना चाहिए। नीति–निर्माण में विकास की परिभाषा केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि साँस्कृतिक स्थायित्व और जनकल्याण से मापी जानी चाहिए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' इसी समग्र दृष्टिकोण को सामने रखता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य केवल आर्थिक या राजनीतिक प्राणी नहीं, बल्कि एकात्म अस्तित्व का जीवंत प्रतीक है। जब समाज में यह समन्वय स्थापित होता है, तभी सच्ची प्रगति संभव होती है।

महर्षि दयानंद से लेकर महात्मा गाँधी तक, सभी ने सादगी, स्वदेशी और आत्मसंयम के माध्यम से सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संतुलन का मार्ग बताया। गाँधीजी का कथन कि पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ है, परंतु किसी एक के लोभ को नहीं, आज भी उतना ही प्रासंगिक है। यह चेतावनी हमें यह समझाती है कि विकास की दौड़ में यदि हम संवेदना और संतुलन खो देंगे, तो अंततः मानवता ही संकट में पड़ जाएगी।

आज समय की मांग है कि भारत अपने प्राचीन, किंतु शाश्वत विचारों को आधुनिक भाषा में पुनः प्रस्तुत करे। विद्यालयों में संस्कृति और पर्यावरण के संयुक्त अध्ययन को प्रोत्साहन मिले, ग्राम स्तर पर वृक्षारोपण और जल–संरक्षण को धार्मिक कर्तव्य माना जाए, और नगरों में सामाजिक एकता के साँस्कृतिक उत्सवों को बढ़ावा दिया जाए। जब व्यक्ति और समाज, दोनों स्तरों पर यह परिवर्तन होगा, तभी सच्चा संतुलन संभव है।

भारतीय चिंतन में समाज और पर्यावरण दो पृथक विषय नहीं, बल्कि एक ही चेतना के दो रूप हैं। जब समाज में समरसता होगी, तभी प्रकृति में संतुलन संभव होगा। और जब प्रकृति सुरक्षित होगी, तभी मानव समाज सुरक्षित रहेगा। इसीलिए आज आवश्यक है कि भारत अपने प्राचीन विमर्शों–एकात्म मानववाद, समरसता, सहअस्तित्व और कर्तव्यभाव–को पुनः जीवंत करे। यही विमर्श भारत ही नहीं, समूचे विश्व को दिशा दे सकते हैं, जहाँ विकास का आधार केवल भोग नहीं, बल्कि उपकार हो; विभाजन नहीं, विवेक हो; और प्रगति का लक्ष्य प्रकृति का संरक्षण और समाज का सद्भाव हो।

आज समय की मांग है कि भारत अपने प्राचीन, किंतु शाश्वत विचारों को आधुनिक भाषा में पुनः प्रस्तुत करे। विद्यालयों में सँस्कृति और पर्यावरण के संयुक्त अध्ययन को प्रोत्साहन मिले, ग्राम स्तर पर वृक्षारोपण और जल–संरक्षण को धार्मिक कर्तव्य माना जाए, और नगरों में सामाजिक एकता के साँस्कृतिक उत्सवों को बढ़ावा दिया जाए। जब व्यक्ति और समाज, दोनों स्तरों पर यह परिवर्तन होगा, तभी सच्चा संतुलन संभव है।

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

350वें बलिदान दिवस पर श्री गुरु तेगबहादुर जी को शत शत नमन!

नौवें गुरु, नौवें नानक, सृष्ट दी चादर, धरम दी चादर, हिंद दी चादर के नाम से सुप्रसिद्ध श्री गुरु तेगबहादुर जी महाराज ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए 54 वर्ष की आयु में अपना बलिदान दिया 24 नवम्बर 1675 ई. को। औरंगजेब के आदेश से जहाँ उनका शिश काटा गया मुगलों द्वारा वहाँ दिल्ली में आज भी सीसगंज गुरुद्वारा साहिब है और जहाँ उनका दाह संस्कार हुआ वहाँ रकाबगंज गुरुद्वारा साहिब है। गुरु जी पक्के सिद्धान्तों वाले निडर योद्धा थे, वे एक आध्यात्मिक विद्वान और कवि भी थे, उनके रचे हुए 115 भजन श्रीगुरुग्रन्थ साहिब में सम्मिलित हैं। उनके तेग (तलवार) चलाने की अद्वितीय क्षमता और कला के कारण उन्हें तेगबहादुर नाम मिला था। मुगलों के खिलाफ करतारपुर की लड़ाई में अद्भुत विरता दिखाने के कारण त्यागमल बन गए गुरु तेगबहादुर जी।

उन्हें बाल्यकाल में ही तीरंदाजी और घुड़सवारी की शिक्षा दी गई, साथ ही वेद, पुराण और उपनिषदों का अध्ययन भी कराया गया। 3 फरवरी 1632 ई. को उनका विवाह गुजरी देवी जी से हुआ।

तेग बहादुर जी गुरु कैसे बने?

1640 ई. में गुरु हरगोविंद जी अपनी पत्नी नानकी देवी, पुत्र तेगबहादुर और गुजरी देवी के साथ अमृतसर के अपने गाँव बाकला चले गए, अंत तक वहीं रहे। गुरु हरगोविंद जी की मृत्यु के बाद भी गुरु तेगबहादुर बहुत समय तक वहीं रहे।

मार्च 1664 ई. में गुरु हरगोविंद सिंह जी को चेचक हो गया, तब उनके अनुयाइयों ने उनसे पूछा कि उनके बाद गुरु कौन होगा? गुरु हरगोविंद जी ने उत्तर में कहा– "बाबा बकाला", अर्थात् उत्तराधिकारी बकाला में ही मिलेगा। गुरु जी के प्रयाण के पश्चात यह जानकारी सबको होने के कारण बहुत से लोगों ने अपने आपको गुरु घोषित कर लिया। उन्हीं दिनों एक व्यापारी माखन शाह लबाना व्यापारिक यात्रा में जा रहे थे, जहाज डुबने की स्थिति आई, तो अपने

बचाव के लिए सिख गुरु को 500 स्वर्ण मुद्राएँ देने का संकल्प लिया। दुर्घटना टल गई, उनकी जान बच गई, तब वो नौवें गुरु की खोज में बकाला आए। जितने भी गुरु घोषित थे, उन सब से मिले और दो स्वर्ण मुद्राएँ देकर आगे बढ़ते गए। सबने स्वर्ण मुद्राएँ लेने के बाद उनको विदा किया। ऐसे ही वो गुरु तेगबहादुर को भी दो स्वर्ण मुद्राएँ देकर जाने लगे, तो गुरु तेगबहादुर ने आशिर्वाद देने के बाद कहा कि तुम्हारा भेंट तुम्हारे संकल्प से कम है। माखन शाह के संकल्प को तेगबहादुर जान गए, और कह भी दिया, माखन शाह ने पूरे 500 स्वर्ण मुद्राएँ गुरु जी को अर्पित किया और छत की ओर दौड़कर भागा। छत पर जाकर जोर से चिल्लाया "गुरु लाधो रे। गुरु लाधो रे।" अर्थात् मुझे गुरु मिल गया रे। मुझे गुरु मिल गया रे। तब से सभी स्वघोषित गुरुओं की दुकानें बंद हुई और श्री तेगबहादुर जी नौवें गुरु के रूप में स्थापित हुए।

भगवान अमरनाथ का आदेश 9वें गुरु से मिलो

कश्मीर में जब मुसलमानों का अत्याचार हिन्दू समाज पर बढ़ गया, महिलाओं का बलात्कार, जबरन धर्मांतरण की घटनाएँ, जिहादी हमले और अपमानजनक घटनाएँ अधिक होने लगीं, तो वहाँ के हिन्दू दुख और निराशा के इस वातावरण में अपनी व्यथा का बखान करने, निदान हेतू प्रार्थना और पूजा करने भगवान अमरनाथ की गुफा में गए। भगवान को अपना कारुण्य रुदन सुनाकर जब सभी ने पूजा, प्रार्थना, भजन, आरती किया, तब एक भविष्यवाणी हुई और सबको भगवान ने कहा कि तुम सब मिलकर गुरु तेगबहादुर के पास जाओ, वही तुम्हारी रक्षा करेंगे।

कश्मीरी पंडित मिले श्री गुरु तेगबहादुर जी से

औरंगजेब के समय अनेक प्रकार के आक्रमण और अत्याचार मुसलमानों ने हिन्दुओं पर करना आरम्भ किया, तो इस पीड़ा से त्रस्त होकर, भगवान अमरनाथ की आज्ञा से पंडित कृपाराम के नेतृत्व में कश्मीरी पंडितों का एक समुह आनंदपुर में जाकर गुरु तेगबहादुर जी से मिला। गुरु जी ने कश्मीरी पंडितों की व्यथा–दुखदर्द को बहुत ध्यान से सुना और तुरंत समाधान भी निकाला।

बड़े महापुरुष का बलिदान

कश्मीरी पंडितों की व्यथा जानकर गुरु जी ने कहा कि यह अत्याचार, अपमान और धर्मांतरण किसी महान पुरुष के बलिदान से ही रुकेगा। अब एक यही मार्ग है।

आपसे बड़ा महापुरुष कौन?

जब गुरु साहिब ने यह कहा कि किसी महान पुरुष को बलिदान देना होगा, तो वहीं बैठे 9 वर्ष के बालक गोविन्द राय ने कहा कि पिताजी आपसे बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है? बेटे का विचार सुनते ही गुरु जी बलिदान के लिए संकल्पित हो गए।

औरंगजेब को संदेश भेजो

कश्मीरी पंडितों से गुरु जी ने कहा कि औरंगजेब को संदेश भेजो कि यदि तुमलोगों ने गुरु तेगबहादुर जी का धर्मपरिवर्तन करके मुसलमान बना लिया, तो हमलोग भी मुसलमान बन जायेंगे। यह संदेश औरंगजेब को भेजा गया।

गुरुजी को गिरफ्तार कर दिल्ली लाया

यह संदेश सुनते ही औरंगजेब ने श्री गुरु तेगबहादुर जी को गिरफ्तार करने का आदेश जारी किया। औरंगजेब की मुगल सेना द्वारा गुरु जी को उनके साथियों समेत गिरफ्तार करके दिल्ली लाया गया।

गुरु जी को औरंगजेब की धमकी

औरंगजेब ने गुरु जी को बहुत लालच दिया। लालच के आगे गुरु जी नहीं झुके, तो धमकी देना शुरु किया। लेकिन गुरु तेगबहादुर जी फिर भी नहीं झुके। उन्होंने औरंगजेब का डर और दबाब नहीं माना और उसकी बातें अस्वीकृत कर दी।

गुरु जी के साथियों का बलिदान

गुरु तेगबहादुर जी डर जाएँ, उस उद्देश्य से उनके सामने ही मुगलों ने भाई मतिदास को आरे से चिरवा दिया। भाई दयाला को उबलते हुए पानी में डाल दिया गया। भाई सतिदास को जिंदा जला दिया गया। यह सब उनकी आँखों के सामने घटित होने पर भी गुरु तेगबहादुर जी रति भर भी प्रभावित नहीं हुए और औरंगजेब के धर्मांतरण के प्रस्तावों को सिरे से नकार दिया।

गुरु तेगबहादुर जी का बलिदान

जब औरंगजेब के सारे प्रयास विफल हो गए, उनका धर्मांतरण करके उन्हें मुसलमान बनाने में उसे विफलता हाथ लगी, तो वह गुरुजी को चांदनी चौक पर लेकर आया और तलवार से गुरु जी की गर्दन उनके धड़ से अलग कर दिया। इसके बाद औरंगजेब ने यह फरमान जारी किया कि कोई इनका दाह–संस्कार नहीं करेगा, इनकी अंतिम क्रिया नहीं करेगा। गुरु जी का बलिदान सृष्टि पर्यंत प्रेरणा देगा

औरंगजेब की विफलता ने हिन्दुओं को संबल दिया

गुरु तेगबहादुर जी के तपबल के आगे औरंगजेब पराजित हो गया था। हिन्दू स्वाभिमान की विजय हुई। हिन्दू समाज ने अपना धर्म नहीं बदलने का निश्चय किया और हिन्दुओं की धार्मिक भावना दृढ़ हो गई, समाज का अस्तित्व बचाने वाला यह परम बलिदान हिन्दू समाज को सदियों, सहस्त्राब्दियों तक प्रेरित करता रहेगा, अपना धर्म प्राणों से भी प्रिय है, इस बात की प्रेरणा सृष्टि पर्यंत मिलती रहेगी।

गुरुजी तीर्थों में जाते थे

जहाँ भी गए वो सभी स्थान तीर्थ बन गए गुरु जी कुम्भ में कल्पवास करते थे। सदैव तीर्थयात्रा करते थे, शिष्यों से मिलते थे, उन्हें शिष्य दान भी बहुत करते थे, लेकिन शिष्यों से जो कुछ भा मिलता था, वह सब निर्धन शिष्यों में बांट देते थे। गुरु जी का तपबल इतना असाधारण था कि वो जहाँ–जहाँ भी गए, वो सभी स्थान तीर्थ बन गए, उन लगभग सभी स्थानों पर आज पवित्र गुरुद्वारे बने हुए हैं और बहुत प्रसिद्ध भी हैं।

भूल सुधार

भगवान बिरसा मुंडा जी का परलोकगमन 9 जुन 1900 ई. को था, जबकि गलती से 1990 प्रकाशित हो गया है। इस भूल के लिए हिन्दू विश्व सुधी पाठकों से क्षमा प्रार्थना करता है।

— सम्पादक, हिन्दू विश्व।

श्री गुरु तेग बहादुर जी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डा. सोनिका (सहायक प्राध्यापिका)

श्री गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे। गुरु जी का व्यक्तित्व बहुमुखी एवं अद्वितीय था। उन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान देकर उजड़ रहे राष्ट्र की रक्षा की, इसलिए श्री गुरु तेग बहादुर जी को हिंद दी चादर भी कहा जाता है। उनके जैसा बलिदान इतिहास में कहीं नहीं मिलता।

श्री गुरु तेग बहादुर जी का जन्म –
उनका जन्म 1 अप्रैल 1621 ई. को अमृतसर में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरु हरगोबिंद साहिब जी था, जो सिखों के छठे गुरु थे। उनकी माता का नाम नानकी जी था। गुरु तेग बहादुर जी का बचपन का नाम त्याग मल्ल था, लेकिन एक बार उन्होंने ऐसी तलवारबाजी दिखाई कि उनके पिता ने उनका नाम बदलकर तेग बहादुर रख दिया।

तेग बहादुर की उपाधि
मुगलों से युद्ध करते हुए उन्होंने पलाही के युद्ध में अपने पिता हरगोबिंद जी का साथ दिया। इस युद्ध में आपने ऐसी तलवारबाजी दिखाई कि आपको तेग बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया। तेग बहादुर जी अपनी माता नानकी जी और पत्नी गुजरी जी के साथ बाबा बकाले में आकर पूजा करने लगे। श्री गुरु तेग बहादुर जी का बचपन – गुरु जी बचपन से ही गंभीर स्वभाव के थे। उन्हें एकांत प्रिय था। वे कहीं एकांत में बैठकर प्रभु भक्ति में लीन रहते थे। उनके पिता ने अपनी देखरेख में उनकी शिक्षा का प्रबंध किया। साक्षरता के साथ–साथ उन्हें शस्त्र शिक्षा भी दी गई।

श्री गुरु तेग बहादुर जी का गुरु गद्दी पर विराजमान होना
जब आठवें गुरु, गुरु हरकृष्ण जी का निधन हुआ, तो उन्होंने बीमारी की हालत में संगत से कहा, 'बाबा बकाले', जिसका अर्थ था कि संगत अपने नौवें गुरु से बकाले गाँव में मिलेगी। संगत अपने नौवें गुरु की तलाश में बकाले पहुँचने लगी। वहाँ कई भीखी गुरुओं का जन्म हुआ। वहाँ 22 गुरु थे। प्रत्येक गुरु नौवां गुरु होने का दावा कर रहा था। संगत उन भीखी गुरुओं को देखकर हैरान रह गई।

उन भीखी गुरुओं का रहस्य मक्खन शाह लुबाना नामक एक व्यापारी ने बताया। एक बार माखन शाह लुबाणा के पास अपने गुरु की 500 मोहरें थीं। अपना कार्य पूरा करने के बाद, वह अपने गुरु को पाँच सौ मोहरें अर्पित करने के लिए बकाला पहुँचे। वहाँ 22 गुरुओं को देखकर वह भी आश्चर्यचकित हो गए। वह दो–दो मोहरें लेकर उनके सामने झुकने लगे। किसी ने उनसे पाँच सौ मोहरें नहीं माँगी। माखन शाह की अपने गुरु की खोज पूरी नहीं हुई थी, जब उन्होंने पूछा, तो किसी ने बताया कि एक संत गुफा में तपस्या कर रहे हैं। वह वहाँ पहुँचे। उन्होंने भी उनके सामने केवल दो मोहरें रखीं। जब वह लौटने लगे, तो उस संत ने कहा, "मखन शाह! आप तो प्रसन्न थे और आपके पास पाँच सौ मोहरें थीं, फिर ये दो मोहरें क्यों?" उस संत के ऐसे वचन सुनकर माखन शाह नाच उठे। वह छत पर चढ़ गए और "गुरु लाधो रे – गुरु लाधो रे" चिल्लाते हुए कहा कि उन्होंने अपने नौवें गुरु की खोज कर ली है। ये वही संत हैं, जो नौवें गुरु थे। तब से उन्होंने गुरुपद ग्रहण किया।

श्री गुरु तेग बहादुर जी का धर्म प्रचार कार्य
गुरुपद ग्रहण करने के बाद उन्होंने धर्म प्रचार प्रारंभ किया। इसी दौरान उनका विवाह करतापुर में भाई लाल चंद जी की पुत्री बीबी गुजरी माता गुजरी जी से हुआ। उन्हीं के गर्भ से गुरु गोबिंद सिंह जी के रूप में एक अमूल्य रत्न का जन्म हुआ। जिस समय गुरु बाल गोबिंद राय जी का जन्म हुआ, उस समय वे भी धर्म प्रचार के लिए गए हुए थे।

श्री गुरु तेग बहादुर जी द्वारा आनंदपुर साहिब की स्थापना
वे बकाला से कीरतपुर आए। उन्होंने कहलूर के राजा से भूमि लेकर आनंदपुर साहिब की स्थापना की। यहीं पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की।

श्री गुरु तेग बहादुर जी और कश्मीरी पंडितों की विनती
एक दिन वे गुरुपद पर विराजमान थे। कुछ कश्मीरी पंडितों ने आकर विनती की कि औरंगजेब उन्हें जबरन इस्लाम धर्म अपनाने पर तुला हुआ है, उनकी रक्षा की जाए। उस समय बाल गोबिंद राय नौ वर्ष के थे, वे पास ही बैठे थे। श्री गुरु तेग बहादुर जी कश्मीरी पंडितों से कहने लगे कि इस समय किसी महापुरुष का बलिदान ही उनके अत्याचारों का अंत कर सकता है। पास बैठे बाल गोबिंद राय जी ने कहा कि पिताजी, इस समय आपसे बड़ा महापुरुष कौन हो सकता है। अपने पुत्र के ऐसे साहसी वचन सुनकर वे बलिदान देने के लिए दिल्ली की ओर चल पड़े।

श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत
औरंगजेब ने उन्हें इस्लाम धर्म अपनाने को कहा। जब वे नहीं माने तो उन्होंने स्वयं दिल्ली के चांदनी चौक में शहीद हो गए। शहीदों में भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दयाला जी का नाम भी आता है। वर्तमान में सीस–गंज नाम का एक गुरुद्वारा है जहाँ लाखों श्रद्धालु उनके दर्शन करने जाते हैं। यह दिल्ली में स्थापित है। श्री गुरु तेग बहादुर जी की बाणी की रचना – आपने अनेक बाणियों की रचना की है। आपकी सभी बाणियाँ शांति प्रदान करने वाली हैं। आपने श्री गुरु तेग बहादुर जी की बाणी को 16 रागों में रचा है। आपके द्वारा रचित 59 शबद और 57 श्लोक गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं।

डॉ. श्रुति शर्मा

गुरु तेग बहादुर

सत्य, साहस और करुणा के प्रतीक

गुरु तेग बहादुर का नाम भारतीय इतिहास में उस तेजस्वी सूर्य की भाँति अंकित है, जिसने अन्याय, अत्याचार और अधर्म के अंधकार को अपने आत्मबलिदान के प्रकाश से मिटा दिया। वह केवल सिख परंपरा के नौवें गुरु ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय सँस्कृति के उस अमर आदर्श के प्रतीक हैं, जिन्होंने सत्य, साहस और करुणा को एक साथ जिया। उनके जीवन का प्रत्येक अध्याय धर्म की रक्षा, मानवता की प्रतिष्ठा और आत्मिक स्वतंत्रता की गूंज से भरा हुआ है।

गुरु तेग बहादुर का जन्म 1621 ई. में अमृतसर में गुरु हरगोबिन्द जी के घर हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें अद्‌भुत संयम, मौन और आत्मचिंतन की प्रवृत्ति दिखाई दी। उन्होंने अपने पिता से न केवल आध्यात्मिकता का अमृत पाया, बल्कि वीरता की विरासत भी। इसीलिए उन्हें "तेग बहादुर" अर्थात् "शौर्य की तलवार" नाम दिया गया। उन्होंने समझाया कि सच्चा धर्म न केवल पूजा या उपासना है, बल्कि अन्याय और अधर्म के विरुद्ध खड़े होने का साहस भी है। गुरु हरगोबिन्द जी ने 'मीरी' और 'पीरी' की जो दो तलवारें धारण की थीं, एक सांसारिक शक्ति की और दूसरी आध्यात्मिक बल की। उनका अद्‌भुत संतुलन ही आगे चलकर गुरु तेग बहादुर के व्यक्तित्व में मूर्त हुआ। उन्होंने दिखाया कि अध्यात्म और पराक्रम विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

सत्रहवीं सदी का भारत धार्मिक असहिष्णुता और जबरन धर्मांतरण की नीतियों से कराह रहा था। उस समय कश्मीर के पंडितों और अनेक हिन्दू समाजों ने धर्म और अस्तित्व की रक्षा के लिए आश्रय की पुकार लगाई। जब ये ब्राह्मण गुरु तेग बहादुर के पास पहुँचे, तो उन्होंने बिना किसी संकोच के कहा– "यदि तुम सब का धर्म बचाना है, तो पहले मेरे प्राण लेने होंगे।" यह वाक्य केवल त्याग का नहीं, बल्कि सनातन आत्मा के अमर विश्वास का उद्‌घोष था। वे दिल्ली ले जाए गए, पर धर्म बदलने से इनकार कर दिया। अंततः 1675 ई. में चाँदनी चौक के 'सीस गंज' में उनका शीश काटा गया। इतिहास साक्षी है कि उन्होंने कहा–"सर दिया, पर धर्म न दिया।" उनका यह बलिदान केवल सिख धर्म के लिए नहीं था। यह सम्पूर्ण मानवता के आत्मसम्मान और धार्मिक स्वतंत्रता का रक्षक बन गया, इसीलिए उन्हें "हिन्द दी चादर" अर्थात् 'हिन्दू धर्म की ढाल' कहा जाता है। गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने पिता के इस अद्‌भुत त्याग को इन पंक्तियों में अमर कर दिया –

"तिलक जंञू राखा प्रभ ताका।।
कीनो बड़ो कलू महि साका।।
साधन हेति इती जिनि करी।।
सीसु दीया परु सी न उचरी।।"

यह पंक्तियाँ गुरु जी के उस अद्वितीय बलिदान को दर्शाता है, जिसमें उन्होंने धर्म और साधना की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए, पर सत्य और श्रद्धा से कभी विमुख नहीं हुए। उन्होंने यह सिद्ध किया कि धार्मिक मर्यादा और आत्मसम्मान की रक्षा हेतु दिया गया बलिदान केवल मृत्यु नहीं, बल्कि आत्मा की विजय है।

गुरु तेग बहादुर जी का जीवन और बलिदान भगवद्‌गीता के इस अमर श्लोक – *"न हि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति"* का सजीव प्रमाण है। "गुरुजी ने अपने जीवन के माध्यम से यह प्रत्यक्ष किया कि धर्म का मार्ग केवल

आचरण का पथ नहीं, अपितु आत्मा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है, जहाँ व्यक्ति सत्य में स्थित होकर मृत्यु को भी धर्म का उत्सव बना देता है। उन्होंने धर्म, सत्य और न्याय के दीप को प्रज्वलित रखने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। जब उस युग में असहिष्णुता, भय और अन्याय का अंधकार सम्पूर्ण भारतभूमि पर छा रहा था, तब गुरु तेग बहादुर जी उस काल के आलोक बनकर प्रकट हुए। उन्होंने न केवल जबरन मतांधता के विरुद्ध स्वर उठाया, बल्कि यह भी सिखाया कि धार्मिक स्वतंत्रता और श्रद्धा का अधिकार प्रत्येक मानव का जन्मसिद्ध और ईश्वरप्रदत्त अधिकार है।

गुरु तेग बहादुर जी का जीवन भगवद्गीता के निष्काम कर्मयोग का साक्षात् जीवंत रूप था। उन्होंने दिखाया कि सच्चा कर्म वह है, जो फल की चिंता से मुक्त होकर धर्म और मानवता के लिए किया जाए। उनके हर कार्य में एक अनोखा संतुलन था, साहस में शांति और त्याग में आनन्द। वह जानते थे कि परिणाम चाहे जैसा भी हो, धर्माचरण ही मनुष्य की सच्ची पहचान है। इसीलिए उन्होंने कहा *"भय काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन"* अर्थात् न किसी को भय देना, न किसी से भय मानना। यह वचन केवल साहस का नहीं, बल्कि आत्मा की उस मुक्ति का प्रतीक है, जहाँ भय समाप्त होता है और ईश्वर का प्रेम प्रकट होता है। गुरुजी का यह दृष्टिकोण गीता के उस अमर संदेश से भी जुड़ा है, जहाँ श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं – *"धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते"* अर्थात् धर्म के लिए किया गया संघर्ष ही मनुष्य का सर्वोच्च कर्म है। गुरुजी ने धर्मयुद्ध को बाहरी युद्ध नहीं माना। वह उनके लिए अंतःकरण का संघर्ष था–सत्य और असत्य के बीच, भय और निडरता के बीच, स्वार्थ और लोक–कल्याण के बीच। उन्होंने यह सिद्ध किया कि धर्म के लिए खड़ा होना ही परम कल्याण है।

गुरु जी की विचारधारा भारतीय दर्शन की अनेक धाराओं का संगम है। उनके जीवन में गीता का कर्मयोग, उपनिषदों की निर्भय आत्मा, भक्ति आंदोलन की करुणा, और वेदांत की एकात्म दृष्टि का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनकी आस्था संत कवियों की वाणी से भी गहराई से जुड़ी थी। कबीरदास ने कहा है *"जहाँ डरै नहिं कोउ, तहाँ प्रेम उपजै आन"* गुरुजी का जीवन इसी निर्भय प्रेम का साकार रूप था, एक ऐसा प्रेम जो सत्य के लिए संघर्ष करता है और मानवता के लिए समर्पित होता है। पुनः तुलसीदास के शब्दों में *"परहित सरिस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहि अधमाई"।* अर्थात् उन्होंने परहित को ही ईश्वर सेवा माना और धर्म की रक्षा को मानवता की रक्षा समझा। उनका समर्पण इस लोकहित धर्म का दिव्य उदाहरण है। उन्होंने परहित को पूजा माना और अधर्म के विरुद्ध खड़े रहना ही सच्चा भक्ति–पथ। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाला कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता, वह स्वयं धर्म का स्वरूप बन जाता है।

उनकी यह दृष्टि वेदांत के अद्वैत और एकात्मवाद से गहराई से जुड़ी हुई थी। ऋग्वेद का वचन–*"एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति"* उनके जीवन में साकार हुआ था। वे जानते थे कि सत्य एक ही है, परंतु उसकी अभिव्यक्तियाँ अनेक रूपों में होती हैं। इसलिए उन्होंने किसी भी धर्म या आस्था को अस्वीकार नहीं किया, बल्कि सभी में उसी परम सत्य की झलक देखी। उनके लिए ईश्वर किसी एक मत या उपासना में सीमित नहीं था। वह प्रत्येक हृदय में विद्यमान था। यही वेदान्तीय दृष्टि उन्हें धार्मिक सहिष्णुता का जीवंत प्रतीक बनाती है। उन्होंने अपने धर्म के साथ–साथ दूसरों के धार्मिक अधिकारों की भी रक्षा की। यह केवल सहिष्णुता नहीं, बल्कि आत्मबोध की वह अवस्था थी जहाँ "मैं" और "तुम" का भेद मिट जाता है।

इस दार्शनिक चेतना का विस्तार हमें आधुनिक युग में महात्मा गाँधी के सत्याग्रह में दिखाई देता है। गाँधीजी ने जिस "सत्य" को अपनी साधना का केंद्र बनाया, वही सत्य गुरु तेग बहादुर जी के जीवन में आचार बनकर प्रकट हुआ। गाँधीजी का "अहिंसा परमो धर्मः" का आदर्श, गुरुजी के निर्भय त्याग में प्रत्यक्ष था। दोनों ही मानते थे कि बल का नहीं, सत्य का राज्य स्थायी होता है। गुरुजी का बलिदान सत्याग्रह का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है, जहाँ अन्याय के विरुद्ध बिना हिंसा और बिना द्वेष के, आत्मबल के आधार पर संघर्ष किया गया। गाँधीजी ने इसी आत्मबल को "सत्याग्रह" नाम दिया, पर उसका बीज गुरु तेग बहादुर जी की धर्मनिष्ठ आत्मा में पहले से अंकुरित था।

इस प्रकार गुरु तेग बहादुर जी की वेदान्तीय दृष्टि और गाँधीजी की नैतिक चेतना एक ही वृक्ष की दो शाखाएँ हैं–एक ने धर्म के लिए प्राण अर्पित किए, और दूसरे ने धर्म को कर्म के माध्यम से जगाया। दोनों हमें यह संदेश देते हैं कि सत्य में स्थित व्यक्ति न भयभीत होता है,

न पराजित, क्योंकि सत्य ही उसका आश्रय है और करुणा ही उसका स्वरूप।

वह केवल योद्धा नहीं थे, वह करुणा के सागर भी थे। उनकी वाणी में मानवता की गहरी संवेदना झलकती है। वे हर प्राणी में ईश्वर के दर्शन करते थे। उनके लिए मानवता किसी धर्म, जाति या पंथ से ऊपर थी। यही कारण था कि उनके अनुयायियों में हिन्दू, मुसलमान और सभी समाजों के लोग सम्मिलित थे। गुरुजी के जीवन का यह करुणामय पक्ष हमें यह भी सिखाता है कि सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह नहीं, जो केवल अपने ईश्वर की उपासना करे, बल्कि वह है जो सभी में उसी ईश्वर को देखे।

गुरु तेग बहादुर का बलिदान उस सनातन चेतना का पुनर्जागरण था, जिसने भारत को सदियों से जीवित रखा है। यह वही भावना है जो भगवान कृष्ण की *'धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे–युगे'* की घोषणा में व्यक्त हुई थी। उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि भारत की आत्मा न कभी मरी है, न कभी मर सकती है। वह हर बार और अधर्म के सामने गुरु तेग बहादुर जैसे आत्मबलिदानियों के रूप में प्रकट होती है। आज जब विश्व भर में साँस्कृतिक संघर्ष और नैतिक पतन की स्थिति है, तब गुरु तेग बहादुर का जीवन एक दीप–स्तम्भ बनकर हमें स्मरण कराता है कि धार्मिक सहिष्णुता, सत्य और करुणा ही मानव सभ्यता की स्थायी नींव हैं।

गुरु तेग बहादुर का बलिदान गुरु गोविन्द सिंह की प्रेरणा का आधार बना। पिता के शहादत से ही पुत्र में खालसा के निर्माण की ज्वाला जगी। इस प्रकार गुरु तेग बहादुर की आत्मा खालसा पंथ के प्रत्येक सैनिक में धड़कती रही–जहाँ धर्म के लिए प्राण देने की भावना सर्वोच्च मानी गई। उनकी यह परंपरा किसी एक समुदाय की नहीं, बल्कि भारत की सामूहिक राष्ट्रीय चेतना की धारा है। वह हमें सिखाते हैं कि धार्मिक आस्था और राष्ट्रीय कर्तव्य एक–दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि एक ही सुर की दो ध्वनियाँ हैं।

तीन सौ वर्षों के पश्चात् भी गुरु तेग बहादुर का संदेश उतना ही जीवंत है। आज जब भारत साँस्कृतिक आक्रमणों और मानसिक दासता से जूझ रहा है, तब उनका जीवन हमें आत्मविश्वास और आत्मबल की प्रेरणा देता है। वह हमें स्मरण कराते हैं कि "धर्म रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है। हमारे हिन्दू संगठन जब 'धर्म, संस्कार और स्वाभिमान' के पुनर्जागरण का कार्य कर रहे हैं, तब गुरु तेग बहादुर की स्मृति मार्गदर्शन देती है। उनका बलिदान हमें यह विश्वास दिलाता है कि जब भी सत्य और धर्म पर संकट आएगा, भारत की आत्मा पुनः खड़ी होगी।

गुरु तेग बहादुर का जीवन केवल इतिहास नहीं, बल्कि सनातन प्रेरणा है। वे सत्य की निष्ठा, साहस की प्रतिमा और करुणा के सागर थे। उन्होंने दिखाया कि धर्म की रक्षा केवल शब्दों से नहीं, बल्कि आचरण और बलिदान से होती है। आज जब हम उनकी त्रिशताब्दी मनाने जा रहे हैं, तो यह केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि प्रतिज्ञा का क्षण है कि हम भी उनके आदर्शों पर चलकर सत्य, साहस और करुणा के मार्ग को अपनाएंगे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। गुरु तेग बहादुर का अमर बलिदान युगों–युगों तक भारत भूमि को यह सन्देश देता रहेगा–"जो धर्म के लिए खड़ा होता है, वही इतिहास बनाता है।

मध्यभारत प्रांत के गंजबासौदा में गोपाष्टमी महोत्सव कार्यक्रम

मध्यभारत प्रान्त के जिला गंज बासौदा के लटेरी प्रखंड में भव्य गोपाष्टमी और नवीन गो शाला का लोकार्पण हुआ। इस गरिमामय कार्यक्रम में विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री जितेंद्र जी पवार, प्रांत संयोजक अवधेश तिवारी, स्थानीय विधायक श्री उमाकांत शर्मा, विभाग सह मंत्री चंद्रभान सिंह, विभाग संयोजक श्री सचिन यादव सहित जिला, प्रखंड के कार्यकर्ता एवं समाज के वरिष्ठ जन उपस्थित रहे।

श्री जितेंद्र जी पवार ने कहा कि गौ माता हमारी जीवनदायिनी है। माँ शब्द की उत्पति भी गौ माता से ही हुई है, हमारे 33 कोटि देवी–देवता का वास गौ माता में है, हमारे जन्म से लेकर मृत्यु के सभी संस्कारों में गौ माता का महत्व है और गौ माता का दूध पीकर हम बड़े होते हैं, हर किसान को गौ पालन की ओर ध्यान देना चाहिए, गौ माता का दूध केवल दूध ही नहीं अमृत होता है, हमारे किसान को गौ पालन के साथ जैविक खेती की ओर बढ़ना चाहिए, तभी मानवता का कल्याण होगा। लगभग 100 बीघा जमीन अतिक्रमण से मुक्त करा के यह गो शाला शुरू हुई, जो कि विहिप के देशी गौ वंश संरक्षण न्यास और स्वर्गीय लक्ष्मीकांत शर्मा समिति संचालित करेगी।

मृत्युंजय दीक्षित

संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर
माओवाद का समापन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में गृहमंत्री अमित शाह ने देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बने माओवाद को मार्च 2026 तक समाप्त करने का जो संकल्प लिया है, वह अब सिद्धि की ओर अग्रसर है। देश का एक बहुत बड़ा भू भाग जो विकास की मुख्यधारा से अलग था, अब शेष भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को तत्पर है। माओवाद का अंत गृहमंत्री अमित शाह के संकल्प व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास मन्त्र से ही संभव हो सका है।

आज छत्तीसगढ़ के नक्सलवादी आतंकवाद के लिए कुख्यात बस्तर में तिरंगा फहरा रहा है और नक्सलवादियों के गढ़ में गृहमंत्री अमित शाह की जनसभाएँ हो रही हैं। गृहमंत्री नक्सलवादियों को स्पष्ट संदेश देते हैं कि, "माओवादियों आपके पास अब दो ही विकल्प बचे हैं, या तो समर्पण कर दें या फिर एनकाउंटर के लिए तैयार रहें"। इस सख्ती का ही असर है कि 17 अक्टूबर 2025 को छत्तीसगढ़ में 210 माओवादियों ने एक साथ समर्पण किया है।

उधर महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस के समक्ष छः करोड़ रुपए के इनामी माओवादी पोलित ब्यूरो सदस्य मल्लेजुला वेणुगोपाल राव उर्फ भूपति उर्फ सोनू उर्फ अभय ने 60 साथियों सहित बंदूक छोड़कर विकास कि राह थाम ली है। इन माओवादियों ने 54 हथियारों के साथ आत्मसमर्पण किया है, जिनमें सात एके 47 और नौ इंसास राइफलें है। भूपति माओवादी संगठन में सबसे प्रभावशाली रणनीतिकारों में माना जाता था और उसने लंबे समय तक महाराष्ट्र–छत्तीसगढ़ सीमा पर अभियानों का नेतृत्व किया। भूपति वही खतरनाक माओवादी आतंकवादी है, जिसने छत्तीसगढ़ में सीआरपीएफ के 76 जवानों का नरसंहार किया था।

महाराष्ट्र का गढ़चिरौली जिला दशकों से माओवादी गतिविधियों का केंद्र रहा है। इस क्षेत्र के शीर्ष माओवादी का समर्पण शेष बचे हुए नक्सलियों खासकर निचले स्तर के कैडर को सीधा संदेश दे रहा है कि अब जब उनका सबसे बड़ा और अनुभवी नेता हथियर डाल रहा है, तो उनके पास भागने या छिपने का कोई रास्ता नहीं बचा है। इससे वे भी समर्पण करने के लिए मन बनायेंगे। यह समर्पण छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना जैसे राज्यों के लिए शांति का बड़ा संकेत है। भूपति व उसके साथियों के समर्पण करने से माओवादियों की सबसे मजबूत दीवार ढह गई है।

जनवरी 2023 में गृहमंत्री अमित शाह ने माओवाद के खिलाफ ऑपरेशन को हरी झंडी दी, उसके बाद से अब तक सुरक्षाबलों ने 312 माओवादियों को मार गिराया है। मारे गए माओवादियों में सीपीआई माओवादी महासचिव वासव राजू समेत पोलित ब्यूरो और केंद्रीय समिति के आठ सदस्य भी शामिल हैं। 21 जनवरी 2024 से लेकर अब तक माओवाद के खिलाफ अनेक ऑपरेशन सफलतापूर्वक चलाए जा चुके हैं, जिनमें 836 माओवादी गिरफ्तार किये गए हैं और 1639 आत्मसमर्पण कर चुके हैं।

आत्मसमर्पण करने वालों में पोलित ब्यूरो और एक केंद्रीय समिति सदस्य शामिल है। वर्ष 2010 में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय मनमोहन सिंह ने माओवाद को भारत की सबसे बड़ी चुनौती बताया था, किंतु उस समय राजनीतिक कारणों से माओवाद के पूर्ण सफाए का कोई ब्लूप्रिंट नहीं बन पाया था। मनमोहन सरकार के कार्यकाल में माओवादी बहुत बड़ी चुनौती थे। उस समय ये नेपाल के पशुपतिनाथ से आंध्र प्रदेश के तिरुपति तक लाल कारिडोर बनाने का सपना देख रहे थे। ये भारत, भारत के संविधान और भारत की सनातन सँस्कृति से बैर रखते हैं। इनको सशक्त राष्ट्र नहीं चाहिए।

वर्ष 2013 में विभिन्न राज्यों के 126 जिलों के माओवादी हिंसा से ग्रस्त होने की रिपोर्ट केंद्र को भेजी गई थी। वर्ष 2014 में मोदी सरकार आने के बाद से मार्च 2025 तक यह सँख्या 126 से घटकर केवल 18 जिलों तक सीमित रह गई है। वर्तमान में नक्सल प्रभावित जिलों की सँख्या 11 रह गई है। इनमें छत्तीसगढ़ के सात जिले, झारखंड का एक जिला पश्चिम सिंहभूम, मध्यप्रदेश का एक जिला बालाघाट, महाराष्ट्र का एक जिला गढ़ चिरौली और ओडिशा का एक जिला कंधमाल शामिल है। इनमें भी अब छत्तीसगढ़ के तीन जिले बीजापुर, नाराणपुर और सुकमा ही अति माओवादी प्रभावित बचे हैं।

वर्ष 2014 के पूर्व माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में 15 अगस्त और 26 जनवरी जैसे राष्ट्रीय पर्वों पर तिरंगा फहराना अपराध माना जाता था, गरीबों के लिए सरकारी सहायता नहीं पहुँच पाती थी और दूर दराज के गाँवों से किसी भी माध्यम से संपर्क नहीं हो पाता था। अब समय बदल चुका है, छत्तीसगढ़ के माओवाद से मुक्त हुए क्षेत्रों में विकास की नई गंगा बह रही है। बस्तर जैसे कुख्यात जिले में तिरंगा शान से फहरा रहा है। युवा बड़ी सँख्या में खेलो इंडिया जैसे कार्यक्रमों में भागीदारी कर रहे हैं। माओवादियों से मुक्त हुए क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे का तीव्र विकास किया जा रहा है। कल्याणकारी योजनाएँ लागू की जा रही हैं, जिससे वहाँ की जनता दोबारा माओवादियों के दुष्प्रचार में न फंसे। माओवाद के विरुद्ध अभियान के अंतर्गत उनकी फंडिग को रोकने का काम भी किया जा है।

जैसे–जैसे माओवाद के सफाए का अभियान आगे बढ़ रहा है, वैसे–वैसे उसके समर्थक राजनीतिक तत्वों के पेट में दर्द भी उठ रहा है। माओवाद के समर्थन से फल–फूल रहे वामपंथी दलों ने केंद्र सरकार को पत्र लिखकर माओवादियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान को बंद करने की अपील तक कर दी। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने तो एक कार्यक्रम में कह दिया कि, "माओवाद एक विचारधारा है जो कभी समाप्त नहीं हो सकती। सोशल मीडिया पर भी माओवादी विचारधारा के समर्थक भी यही बात कह रहे हैं कि यह विचारधारा पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकती। माओवाद एक जहरीली, खतरनाक और नरसंहार का समर्थन करने वाली विचारधारा है, जिसका अंत करने के लिए सरकार ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। सुरक्षा बल आक्रामक भी हैं और समर्पण करने वालों का स्वागत भी कर रहे हैं। पुनर्वास और पुनर्जीवन का प्रयास कर रही है। विकास को हर द्वार तक ले जा रही है, जिससे आम व्यक्ति नक्सल के लाल आतंक के भय को भूल कर आगे बढ़ सके।

ymritvsk1973@gmail.com

देवगिरि प्रांत की प्रांतीय बैठक सम्पन्न

विश्व हिन्दू परिषद–धर्मप्रसार विभाग की ओर से देवगिरि प्रांत की प्रांतीय बैठक 11, 12 अक्टूबर 2025 को संभाजी नगर में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सारे प्रदेश से 55 कार्यकर्ता उपस्थित थे, कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करने के लिए मुम्बई क्षेत्र के क्षेत्रीय धर्मप्रसार प्रमुख श्री अजय निलदावर, विश्व हिन्दू परिषद देवगिरि प्रांत के मंत्री श्री जोगेश्वर जी, संगठन मंत्री श्री गणेश मोकाशी एवं अध्यक्ष मा. संजयराव गायकवाड़ उपस्थित थे। बैठक का संचालन प्रांत प्रमुख श्री ढ़ोडिराम महादेव श्रीनगर ने किया, सह प्रांत प्रमुख श्री श्यामभाव रायवाल एवं निधि प्रमुख श्री अजय शर्मा की देखरेख में बैठक सम्पन्न हुई।

jansewa@gmail.com

भारत में बढ़ता जनसँख्या असंतुलन

डॉ. रामशरण गौड

संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा 10 जुलाई, 2025 के जनसँख्या दिवस के अवसर पर 11 जुलाई, 2025 को जारी संयुक्त राष्ट्रसंघ की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि एक सर्वे के अनुसार सभी देशों में मुस्लिमों की जनसँख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। अगले लगभग 15 वर्ष में पाकिस्तान की जनसँख्या 41 करोड़ हो जायेगी और पाकिस्तान विश्व का सबसे ज्यादा जनसँख्या वाले देशों में भारत, चीन के बाद तीसरे नंबर पर हो जायेगा। लगभग अगले 20 वर्षों में भारत भी मुसलमानों की जनसँख्या वाला बहुसँख्यक देश हो जायेगा। जब भारत की जनसँख्या एक अरब साठ करोड़ हो जायेगी। परंतु भारत में हिंदुओं की जनसँख्या निरंतर कम होती जा रही है।

भारत में बढ़ती जनसँख्या पर चिंता व्यक्त की जा रही है और अनेक सरकारी और स्वैच्छिक सँस्थाओं द्वारा जनसँख्या कम करने के लिए उपाय बताने का अभियान चलाने का भी प्रयास किया जा रहा है। परंतु यह प्रयास कहाँ किया जा रहा है? केवल हिंदू परिवारों तक। जबकि हिंदुओं की जनसँख्या पहले ही कम हो रही है। इन सँस्थाओं का मुस्लिम परिवारों तक जाने का साहस नहीं होता।

दूसरी ओर जो लड़कियाँ युवावस्था में यह ठसक दिखाती हैं कि हम विवाह नहीं करते हैं। वे भूल जाती हैं कि वे मनुष्य जीवन की सार्थकता से ही भटक रही हैं। वे बिना विवाह और संतान के अकेले रह जाती हैं, तो न उनके दुख में कोई सम्मिलित होता है और न सुख में। युवावस्था ढलते ही अनेक–रोगों और अवसाद की शिकार हो जाती हैं। वह अकेले ही व्यथित और व्याकुल रहती हैं।

अनेक हिंदू युवक–युवतियों का समय के अनुसार विवाह न करना भी हिंदू जनसँख्या को निरंतर कम कर रहा है। उनकी आयु अब 35–40 वर्ष से ऊपर हो रही है। वे धन कमाने को जीवन के दायित्वों से अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं। वे सोचते हैं पहले खूब धन कमा लें। फिर धीरे–धीरे शादी कर लेगें। ये सोच उनकी आयु को बढ़ाती रहती है। संतान उत्पन्न करने की लड़कियों की एक आयु होती है। उस आयु में उनका विवाह हो जाना चाहिए। लड़कियों की 35–40 आयु हो जाने के कारण उनके संतान पैदा होने की संभावना कम हो जाती है। उनकी आयु प्रजनन के योग्य नहीं रहती है। साथ ही लिव–इन–रिलेशन (सह–निवास) की कुपरंपरा भी भारत में आ गयी है। जिससे अब लड़के–लड़कियों को न विवाह की आवश्यकता है, न संतान उत्पन्न करने की। कुछ जोड़ों की भूल बस संतान पैदा हो जाती है, तो वह भी बहुत कम। परंतु बड़े होने पर ऐसी संतान को अनेक मानसिक पीड़ाओं से गुजरना पड़ता है। इसके अतिरिक्त हिंदू समाज में एक अन्य समस्या उमर कर आ रही है। हिंदू लड़कियाँ–पति के रूप में नौकरी वाले लड़के को अब बरीयता दे रही हैं। विगत कुछ दिन पूर्व दिल्ली में विवाह के लिए एक परिचय समारोह का आयोजन किया गया था। जिसमें विवाह

योग्य लड़कियों ने नौकरी वाले लड़के का पति रूप में चयन की इच्छा व्यक्त की। सभी लड़कियों ने अपना कारोबार करने वाले संपन्न लड़कों को एक सिरे से अस्वीकार कर दिया।

इसका एक अन्य मुख्य कारण हिंदू–मुसलमानों के दंगे और हिंदुओं की हत्याएँ, जिससे मुसलमान बहुल क्षेत्रों से डरकर हिंदू पलायन कर जाते हैं। सम्भल में हुयी हिंसा के संबंध में हुई एक जाँच रिपोर्ट से पता चला है कि भारत की स्वतंत्रता के समय संभल में हिंदुओं की जनसँख्या लगभग 45 प्रतिशत थी, जो घटकर 15 प्रतिशत के लगभग रह गयी है। विगत दस वर्ष पूर्व शामली जिले के कैराना में हिंदुओं की आबादी 22 प्रतिशत थी, जो 2015 में 10 प्रतिशत रह गयी। अब और भी कम हो गयी होगी।

बिहार के किशनगंज जिले में हिंदुओं की जनसँख्या 25 प्रतिशत है, जबकि मुस्लिमों की आबादी 78 प्रतिशत है। विगत अनेक वर्षों से बाँग्लादेशी घुसपैठिये आकर लगातार बँगाल, बिहार, झारखंड में बसते जा रहे हैं। पिछले छह महीनों में सैकड़ों की सँख्या में बाँग्लादेशी घुसपैठिये भारत के विभिन्न क्षेत्रों से पकड़े गये हैं। बिहार के कटिहार जिले में मुस्लिमों की आबादी अप्रत्याशित रूप से बढ़ी है। परिणामस्वरूप वदवा प्रखंड के बलिया बैलोन थाना क्षेत्र में 12 में से 11 पंचायतों के मुखिया भी मुस्लिम हैं।

उत्तराखंड में 2011 की जनगणना के अनुसार मुसलमानों की आबादी 40 प्रतिशत तक बढ़ी है। अब यह और भी अधिक बढ़ गयी है। देहरादून, हरिद्वार, उधमसिंह नगर, नैनीताल आदि जिलों में मुसलमानों की आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है। झारखंड के सभी जिलों में भी मुस्लिम आबादी बड़ी तेजी से बढ़ रही है। जहाँ तक बँगाल का प्रश्न है। बँगाल के मुर्शिदाबाद जिले में मुसलमानों की आबादी बढ़कर 66 प्रतिशत हो गयी है, जबकि हिंदुओं की आबादी 33 प्रतिशत है। मालदा जिले में मुस्लिमों की आबादी 51.27 प्रतिशत है और हिंदुओं की आबादी 63 प्रतिशत से घटकर 48 प्रतिशत रह गयी है और उत्तर दिनाजपुर में मुस्लिम आबादी अब 50 प्रतिशत है, तो हिंदुओं की आबादी 69.30 प्रतिशत से घटकर 49 प्रतिशत रह गयी है।

इसके साथ ही ईसाई संस्थाएँ भी हिंदुओं को ईसाई बनाने में लगी हुई हैं। उत्तर–पूर्व के राज्यों का तो ईसाई मिशनरियों ने ईसाईकरण कर ही दिया। झारखंड के खूंटी जिले के रनिया, तोरपा, मुरहू प्रखंड में ईसाइयों की जनसँख्या 50 प्रतिशत, सिमडेगा में 70 प्रतिशत, गुमला में 30 प्रतिशत तथा लातेहार के महुआडांड़ प्रखंड में 80 प्रतिशत हो गयी है। इसके अतिरिक्त गिरजाघरों के पादरी एवं अन्य ईसाई निरंतर भारत में हिंदुओं को ईसाई बनाने में लगे हुए हैं, जिसके समाचार आये दिन समाचार–पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मुसलमान तो जहाँ खाली जगह मिलती है, वहाँ अवैधानिक रूप से मकान, मस्जिद, मदरसा, मजार बना देते हैं। ये सब होता है भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों की मिलीभगत से। भ्रष्ट नौकरशाही रिश्वत लेकर उनके लिए बिजली, पानी सबकी व्यवस्था कर देती है। जब इन्हें तोड़ने जाते हैं, तो उसके विरुद्ध मुसलमान इकट्ठे होकर विरोध करते हैं, न्यायालय तक पहुँच जाते हैं।

एक अन्य कारण यह भी है कि हिंदू गुरुओं और महापुरुषों को हिंदुओं को सहिष्णु बताना। जिससे हिंदू अपने को निर्बल समझ मुसलमान बहुल क्षेत्रों से पलायन कर रहे हैं। जबकि मुसलमानों के धर्मगुरु (मुल्ला, मौलवी) जनसँख्या बढ़ाने पर जोर देते हैं। अनेक मुसलमान हिंदुओं का धर्मांतरण कराने में लगे हैं। हिंदू एक दूसरे की सहायता और सहयोग नहीं करते। 'मुझे क्या'? की हिंदुओं की मानसिकता उनका एकत्रीकरण नहीं होने देती, जिससे वे भयभीत होकर पलायन करने के लिए विवश होते हैं। यह मानसिकता उन्हें पलायन करने के लिए प्रतिकार नहीं करने देती।

हिंदुओं को समय के साथ बदलना पड़ेगा। उनको इकट्ठा होकर अत्याचारी, हिंसक मुसलमानों का खुलकर प्रतिकार करना होगा। यदि वे अपने स्वार्थ तक सीमित रह कर सोते रहे, तो विगत शतकों की तरह उनकी भावी पीढ़ियों को भयंकर परिणाम भुगतने होंगे। जिनकी वर्तमान में न हिंदू माता–पिता को चिंता है और न वर्तमान हिंदू पीढ़ी को कोई भी चिंता है। जनसँख्या के बढ़ने के कारण देश में भूमि, आकाश, जल, अन्न, रोजगार, चिकित्सा आदि की सुविधाओं पर प्रभाव पड़ रहा हैं। बढ़ती जनसँख्या को आवास एवं अन्य सुविधाएँ देने के लिए कृषिभूमि को काट कर नये–नये नगर बसाये जा रहे हैं। ऊँचे–ऊँचे भवन बनाये जा रहे हैं। यही स्थिति रही तो भारत में खेतिहर भूमि बहुत कम हो जायेगी और हो सकता है कि 1960–80 के दशक की तरह फिर से अन्न का संकट न हो जाय। इसके साथ ही नदियों के खादर (सीमांत क्षेत्र) में भी मकान, होटल आदि लोग बना रहे है। जब नदियों में बाढ़ आदि आती हैं, तो अत्यंत जन–धन की हानि होती है। परंतु इस प्रकार की दुखद घटनाओं को लोग शीघ्र ही भूल जाते हैं। विश्व में मुसलमान इस्लाम धर्म का नहीं 'इस्लामी राजनीति, की वृद्धि के रात–दिन प्रयास कर रहे हैं। जैसा कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री आदित्यनाथ जी ने कहा भी है। मुसलमानों का एकमात्र उद्देश्य है सत्ता पर अधिकार करना, शरीयत कानून लागू कराना। उसे हिंदू समाज को भलीभाँति समझना होगा और अपने वर्चस्व के लिए उठ खड़ा होना। लोग सरकार को कोसते हैं कि वह जनसँख्या नियंत्रण का कोई कानून नहीं बनाती। सरकार लोकतंत्र व्यवस्था में कैसे कानून बनाये। जब वोट की राजनीति है। सरकार किस–किस को नराज करे–

1. भ्रष्टाचारियों को।
2. स्वार्थी, लोभ–लालची जनता को। जहाँ अपने स्वार्थ और धन के लालच में कुछ न दिखाई दे। मुफ्त की रेबड़ियों में बिक जायँ। जिसे राष्ट्रहित दूर–दूर तक दिखाई न दे।
3. चुनाव के समय हिंदू वोट डालने नहीं जाते। या तो वे घरों में सोते रहते हैं या बाहर घूमने चले जाते हैं। चुनाव के लिए मिले सार्वजनिक अवकाश के दिन उनका वोट डालना आवश्यक नहीं है। घूमने के लिए बाहर जाना अत्यंत आवश्यक है।

ये भी गंभीरता से सोचने के विषय हैं। हिंदू क्या कर रहें हैं यह एक सोचनीय विषय है।

ramsharangaur1942@gmail.com

क्रांतिवीर सूर्य टंट्या भील

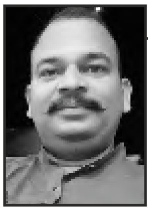

मंगलेश सोनी (युवा स्तम्भकार)

भील जनजाति का वर्णन वैसे तो हमारे भारतीय इतिहास व सनातन ग्रंथों में हजारों वर्ष पूर्व में मिलता है। त्रेता युग में भगवान श्री राम के मित्र निषाद राज गुह भी जनजाति राजा रहे, जिनकी शिक्षा राम जी के ही साथ गुरुकुल में संपन्न हुई थी। वे उनके गुरुकुल के मित्र थे तथा राम जी के वनवास के समय निषादराज गुह ने उनकी अनेकों प्रकार से सेवा व सहायता की। इसके पश्चात महाभारत काल में भी हमें जनजाति समाज के पराक्रम के कई वर्णन मिलते हैं, जिनमें अर्जुन से देवों के देव महादेव के युद्ध का भी वर्णन है, जिसमें महादेव कीरात भील बनकर अर्जुन से युद्ध करते हैं।

जनजाति समाज सदैव से ही राष्ट्रभक्त और स्वाभिमानी रहा है, जिसके कारण इन्होंने किसी भी शासन के आगे कभी घुटने नहीं टेके, वरन अपने कम संसाधनों के साथ जीवन यापन को ही स्वीकार किया। महावीर बप्पा रावल के समय भी भील राजाओं ने अनेकों युद्ध में उनकी सहायता की, उसके पश्चात महाराणा प्रताप के साथ भी हमें राणा पूंजा भील राजा के आक्रांता अकबर की सेना से युद्ध का वर्णन मिलता है, राणा पूंजा ने महाराणा प्रताप के साथ मातृभूमि की रक्षा में समर्पित भाव से मुगलों के विरुद्ध युद्ध लड़े। जनजाति योद्धाओं का इतिहास पराक्रम और वीरता से भरा हुआ है। निमाड़ क्षेत्र के ही भीमा नायक एक बड़े योद्धा हुए। इसी निमाड़ क्षेत्र में एक बड़े क्रांतिकारी हुए, जिन्हें हम क्रांति सूर्य भी कहते हैं। उनका जन्म खंडवा के पंधाना के बड़दा अहीर गाँव में हुआ। इनका मूल नाम तात्या था, परन्तु हिंदी भाषा के अशुद्ध उच्चारण के कारण इनका नाम टंट्या हो गया।

पूरे निमाड़ के क्रांति सूर्य कहे जाने वाले टंट्या भील जनजाति समाज के पराक्रमी योद्धा हुए, जिन्होंने अँग्रेजों से संघर्ष करते हुए लगभग 12 वर्ष तक जनजाति समाज के अधिकारों व क्षेत्र की रक्षा की। क्रांतिकारी टंट्या भील की जमीन धोखे से अधिकार में लेने वाले साहूकारों के विरुद्ध इनका संघर्ष धीरे– धीरे आगे बढ़कर समाज का रक्षक बनकर अँग्रेजी सत्ता के विरुद्ध क्रांति में बदल गया। क्योंकि साहूकार एक बहुत छोटी इकाई थे, कर की वसूली तो अँग्रेजी सरकार करती थी, इतना ही नहीं जनजाति समाज का शोषण भी अँग्रेजी सत्ता द्वारा किया जाता था, जनजाति समाज के जंगल व भूमि पर अँग्रेजी सत्ता अपना अधिकार कर रही थी, जो इनके संघर्ष का मुख्य ज्वालामुखी बना।

इंदौर के पास पातालपानी इनके संघर्ष का मुख्य केंद्र रहा, इसे टंट्या भील ने अपनी कर्मस्थली बनाया, यहीं वे अँग्रेजी अधिकारियों की ट्रेन व गाड़ियों को अपने साथियों के साथ तीर, कमान व गोफन के बल पर रोक लिया करते थे। इन रेलगाड़ियों में भरा धन, नमक, जेवरात, अनाज, तेल आदि जनजाति समाज में बाँट दिया करते थे। इसीलिए वे निरीह समाज के नायक बने और जनता इन्हें देवदूत मानकर समर्थन देने लगी, इतना ही नहीं निर्धन लोगों की

पूरे निमाड़ के क्रांति सूर्य कहे जाने वाले टंट्या भील जनजाति समाज के पराक्रमी योद्धा हुए, जिन्होंने अँग्रेजों से संघर्ष करते हुए लगभग 12 वर्ष तक जनजाति समाज के अधिकारों व क्षेत्र की रक्षा की। क्रांतिकारी टंट्या भील की जमीन धोखे से अधिकार में लेने वाले साहूकारों के विरुद्ध इनका संघर्ष धीरे– धीरे आगे बढ़कर समाज का रक्षक बनकर अँग्रेजी सत्ता के विरुद्ध क्रांति में बदल गया।

सहायता करना, निर्धन कन्याओं का विवाह करवाना, सामाजिक न्याय करना, सबके सुख–दुख में सहभागी बनना, इस कारण वंचित व शोषित समाज इन्हें मामा कहने लगा और ये टंट्या मामा के उपनाम से विख्यात हुए।

क्रांतिवीर टंट्या मामा ने क्रांति की इस ज्वाला को प्रत्येक जनजाति योद्धा में जला दिया, इसी कारण ब्रिटेन सरकार इन्हें अपना घोर शत्रु मानती थी। इन पर इनाम घोषित किया गया, परन्तु वंचित समाज के विश्वास और अपनी गोरिल्ला युद्ध पद्धति से ये सदैव अविजित रहे। बंदूक चलाने का अभ्यास भी इन्होंने अन्य क्रांतिकारियों से सीखा। छापेमार युद्ध पद्धति के कारण अँग्रेजी सरकार इन्हें कभी पकड़ ना सकी, हमला करके ये अपने साथियों के साथ घने जंगलों में छुप जाया करते थे।

निमाड़ के सभी लोगों के अँग्रेजों से त्रस्त होने के कारण जब क्रांतिकारी के रूप में टंट्या भील का उदय हुआ, तो सभी लोग उनकी एक देवता के रूप में जय–जयकार करने लगे। लोग उन्हें वीर टंट्या, कांधे पर तीर कमान रखने वाला टंट्या, भाई–बहनों की लाज बचाने वाला टंट्या एवं अँग्रेजों के अत्याचार से मुक्त कराने वाले टंट्या का देवता के रूप में गुणगान करते हैं।

इन्हें स्वतंत्रता संग्राम का एक बड़ा जनजाति योद्धा भी माना गया। अँग्रेजी सरकार इनके आतंक से इतनी भयभीत थी कि लगभग 24 संघर्षों के बाद भी क्रांतिवीर टंट्या भील को पकड़ नहीं सकी और क्रांतिवीर टंट्या भील को पकड़ने के लिए अँग्रेजी सरकार ने षडयंत्रपूर्वक एक कार्यवाही की, जिसमें इनके ही जीजा गणेश सिंह द्वारा राखी के ही दिन अँग्रेजों के साथ मिलकर धोखे से क्रांतिवीर टंट्या भील को मिलने बुलाता है और अँग्रेजी सैनिक इनको गिरफ्तार कर लेते हैं। इन पर अनेक अँग्रेजी अधिकारियों की हत्या, लूट के लिए दोषी बताकर जबलपुर में 4 दिसंबर 1889 को इन्हें फांसी दे दी गई। जनजाति क्रांति का यह सूर्य अस्त हो गया, परन्तु स्वाभिमान से टकराने का संदेश हर जनजाति युवा को सिखा गया, इन्हें देखकर देश के अन्य क्षेत्रों में भी जनजाति युवाओं ने अँग्रेजों से भीषण संघर्ष किया। आज आवश्यकता देश के लिए जीने की है, क्रांतिवीर टंट्या ने हमें मातृभूमि के लिए जीना सिखाया है, युवाओं को उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्रभक्त और समाज का हित करने वाला बनना चाहिए। तभी टंट्या मामा के जीवन के उद्देश्य को हम जन–जन तक पहुँचा पाएंगे।

कारसेवकों की स्मृति में बजरंग दल हरिद्वार द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन

हरिद्वार, 30 अक्टूबर 2025। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि के लिए चले ऐतिहासिक आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर कारसेवकों की स्मृति में आज बजरंग दल, हरिद्वार द्वारा एक भव्य स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह आयोजन माँ गंगे ब्लड बैंक, एस. आर. मेडिसिटी हॉस्पिटल, जगजीतपुर, हरिद्वार के सहयोग से सम्पन्न हुआ। बजरंग दल का इतिहास राममंदिर आंदोलन के साथ गहराई से जुड़ा रहा है। 1990 के दशक में जब श्रीराम जन्मभूमि के लिए आंदोलन ने स्वरूप लिया, तब देशभर के लाखों युवाओं ने बजरंग दल के झंडे तले श्रीरामलला के दर्शन हेतु अयोध्या की ओर कूच किया। अनेक कार्यकर्ता बलिदान हुए, घायल हुए, लेकिन किसी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज उन्हीं वीरों के बलिदान की स्मृति में यह रक्तदान शिविर आयोजित कर बजरंग दल ने यह संदेश दिया है कि उनका हर कर्म राष्ट्र और धर्म के लिए समर्पित है। इस अवसर पर अखिल भारतीय सहसेवा प्रमुख श्री आनंद हरबोला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। प्रांत संगठन मंत्री श्री अजय कुमार ने कार्यक्रम का उद्घाटन स्वयं रक्तदान करके किया।

आनंद हरबोला, अखिल भारतीय सहसेवा प्रमुख ने बताया कि राममंदिर आंदोलन केवल मंदिर निर्माण का अभियान नहीं था, यह राष्ट्र जागरण की चेतना थी। बजरंग दल ने उस चेतना को जन–जन तक पहुँचाया। हमारे कार्यकर्ताओं ने न केवल संघर्ष किया, वरन समाज सेवा के हर क्षेत्र में स्वयं को सिद्ध किया है। रक्तदान शिविर जैसे आयोजन इस बात का प्रमाण है कि बजरंग दल केवल आंदोलनकारी संगठन नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति पूर्णतः समर्पित सेवा परिवार है।

अजय कुमार, प्रांत संगठन मंत्री उत्तराखण्ड ने कहा कि बजरंग दल का प्रत्येक कार्यकर्ता 'सेवा ही संगठन की शक्ति है' की भावना से प्रेरित रहता है। रक्तदान केवल जीवनदान नहीं, यह राष्ट्रसेवा का जीवंत उदाहरण है। यह शिविर उन कारसेवकों की स्मृति में है, जिनका रक्त श्रीराम जन्मभूमि के पावन आंदोलन की नींव में समाहित है। आज का प्रत्येक रक्तदातृत्व उसी भाव का प्रतीक है कि जब भी राष्ट्र या समाज पुकारेगा, बजरंग दल का युवा आगे बढ़ेगा। जीवेंद्र तोमर जिला मंत्री ने कहा कि बजरंग दल ने सदैव सेवा, सुरक्षा और संस्कार के सिद्धांतों पर चलते हुए समाजहित के कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाई है। चाहे कोरोना काल में रक्तदान और राहत कार्य हों, आपदाओं के समय बचाव दल हों, या, साँस्कृतिक एकता के अभियान, बजरंग दल के कार्यकर्ता हर क्षेत्र में राष्ट्रभक्ति की मिसाल बने हैं।

रक्तदान कार्यक्रम में प्रांत सहसुरक्षा प्रमुख नवीन तेश्वर, जिला मंत्री जीवेंद्र तोमर, सहविभाग मंत्री भूपेंद्र सैनी, जिला संयोजक बजरंग दल अमित मुल्तानिया, जिला सहमंत्री दीपक तालियान, कमल उलियान, प्रजीत कुमार सहित बड़ी सँख्या में कार्यकर्ताओं, युवाओं और समाजसेवियों ने भाग लिया।

वसुबारस

विभिन्न शोध देसी गाय के महत्व को कैसे दर्शाते हैं

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

दिवाली के पहले दिन, वसु बारस पर गौ माता की पूजा की जाती है। प्रत्येक हिंदू गायों को देवता के रूप में पूजता है, और हमारा मानना है कि ईश्वर के अस्तित्व के संदर्भ में गाय सभी जीवित प्राणियों में सर्वोच्च स्थान रखती है। इस दिन के अन्य नामों में नंदिनी व्रत, वसुबारस और गोवत्स द्वादशी शामिल हैं। हिंदू पंचांग के अनुसार, यह आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथि को मनाया जाता है। धन, शक्ति, प्रचुरता, निस्वार्थ दान और समृद्ध जीवन का प्रतीक, गाय भारतीय सँस्कृति में अत्यधिक पूजनीय है। मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्वास्थ्य की गिरावट की दुनियाँ में, देसी गाय कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है, जिनके बारे में हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

देसी गाय के पंचगव्य लाभ

देसी गायों से हमें पाँच तत्व प्राप्त होते हैं – घी, मक्खन, गोबर, मूत्र और दूध। प्रत्येक घटक पर्यावरण और सभी जीवित प्राणियों के स्वास्थ्य के लिए उत्कृष्ट लाभ प्रदान करता है। पंचगव्य सँस्कृत के दो शब्दों 'गव्य' (गाय) और 'पंच' (पाँच) से मिलकर बना है। गोबर, मूत्र, दूध, दही और घी पंचगव्य के मुख्य घटक हैं। किसानों के अलावा कई वैज्ञानिक भी विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार करते हैं। कुछ लोग इन पाँचों सामग्रियों को गन्ने, केले, ताड़ी के रस और कच्चे नारियल के पानी के साथ मिलाकर पंचगव्य बनाते हैं। ऐसा दावा किया जाता है कि यह मिश्रण गंध को कम करता है। शोध बताते हैं कि पंचगव्य अधिक एंटीबॉडी बनाने में मदद करता है, जिससे उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। यह भूख बढ़ाने, घावों को भरने और मनुष्यों में सोरायसिस और सफेद दागों सहित कई बीमारियों को ठीक करने में कारगर साबित हुआ है। ये निष्कर्ष हमारे प्राचीन ग्रंथों के अनुरूप हैं, जिनमें मानव जीवन में पंचगव्य के महत्व की प्रशंसा और वर्णन किया गया है, जिनमें कश्यप संहिता, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, गद निग्रह और रस तंत्र सार शामिल हैं। पंचगव्य का नियमित उपयोग शरीर को विषाक्त पदार्थों से मुक्त करने, भोजन की लत को रोकने, शराब और तंबाकू के सेवन के नकारात्मक प्रभावों का इलाज करने और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।

देसी गोमूत्र के लाभ

गाय को औषधि का खजाना माना जाता है। गोमूत्र से कई साध्य और असाध्य रोग ठीक हो सकते हैं। गोमूत्र के स्वास्थ्य लाभों का वर्णन अथर्ववेद, चरक संहिता, रजनी निघण्टु, वृद्धभागभट्ट, अमृतसागर, भावप्रकाश और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथों में किया गया है। हाल के वर्षों में व्यापक शोध के बाद, इंदौर स्थित गोमूत्र उपचार एवं अनुसंधान केंद्र ने निष्कर्ष निकाला है कि यह मधुमेह, रक्तचाप, अस्थमा, सोरायसिस, एक्जिमा, हृदयाघात, धमनी अवरोध, दौरे, कैंसर, एड्स, बवासीर, प्रोस्टेट, गठिया, माइग्रेन, थायराइड, अल्सर, एसिडिटी, कब्ज, स्त्री रोग, कान और नाक की समस्या और गर्भपात सहित कई बीमारियों का इलाज कर सकता है। वैज्ञानिक शोध से पता चला है कि गोमूत्र के सेवन से कई बीमारियों, खासकर कैंसर, के इलाज में मदद मिलती है। अमेरिका और चीन के पेटेंट इस दावे के लिए चार अलग–अलग प्रमाण प्रदान करते हैं। अमेरिकी पेटेंट (7718360) 18 मई, 2010 को और पेटेंट (100475221) 8 अप्रैल, 2009 को प्रदान किया गया था। इस यौगिक की ऑक्सीडेटिव क्षति से डीएनए की रक्षा करने और उसकी मरम्मत करने की क्षमता दोनों पेटेंट द्वारा सिद्ध की गई है। कैंसर डीएनए ऑक्सीकरण के कारण होता है, यह सर्वविदित है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने गोमूत्र आसवन के लिए पहले ही दो अन्य पेटेंट प्रदान कर दिए हैं (पेटेंट संख्या 6410059 और 6896907)।

देसी गाय का गोबर

गाय के गोबर में रेडियोधर्मी–रोधी, ताप–रोधी और जीवाणुरोधी गुण होते हैं। जब गोबर का उपयोग फर्श साफ

करने और दीवारों को पोतने के लिए किया जाता है, तो घर में रहने वालों की सुरक्षा होती है। 1984 में भोपाल गैस रिसाव में 20,000 से ज्यादा लोग मारे गए थे। जिन लोगों के घरों की दीवारें गोबर से ढकी थीं, वे इससे अप्रभावित रहे। आज भी रूस और भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में विकिरण से बचाव के लिए गाय के गोबर का उपयोग किया जाता है। गोबर जलाने से वायुजनित रोगाणु नष्ट होते हैं और वातावरण का तापमान संतुलित रहता है। पानी के उपचार के लिए गोबर का उपयोग करने से उसकी अम्लीयता कम करने में मदद मिल सकती है।

भौतिकी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. के. एन. उत्तम ने परमाणु विकिरण और रोकथाम रणनीतियों पर चर्चा की। परमाणु विकिरण से निकलने वाली सबसे खतरनाक किरणें गामा किरणें हैं, जिनके बारे में उन्होंने दावा किया कि कुछ प्राचीन भारतीय रीति–रिवाजों का पालन करके इन्हें कम किया जा सकता है। उत्तम ने कहा, 'घरों की बाहरी दीवारों पर गोबर की परत चढ़ाने और जेबों में प्याज रखने जैसे पारंपरिक तरीके हानिकारक गामा किरणों को अवशोषित कर लेते हैं।' दरअसल गोबर में तीनों प्रकार की विकिरणों को अवशोषित करने की क्षमता होती है – गामा, बीटा और अल्फा। उन्होंने आगे बताया कि इनमें से सबसे खतरनाक गामा किरणें हैं, जो शरीर के ऊतकों को भेदती हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पूर्व कर्मचारी उत्तम के अनुसार अगर घरों की बाहरी दीवारों पर गोबर की मोटी परत चढ़ाई जाए, तो लोग सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि यह गामा किरणों को अवशोषित कर लेता है। शोधकर्ता केसरी गुमट ने जोर देकर कहा, 'ताजे गोबर पर चलना बहुत स्वास्थ्यवर्धक होता है।' 'यह घावों को ठीक करता है और सभी बैक्टीरिया और कीटाणुओं को नष्ट करता है। इसके अतिरिक्त, सूखा गोबर मृत त्वचा कोशिकाओं को हटाने और रक्त प्रवाह को बढ़ाने के लिए स्क्रब के रूप में भी अच्छा काम करता है। शोध के निष्कर्षों के अनुसार गोबर में विकिरण–रोधी गुण होते हैं।

देसी गाय का दूध

चरक संहिता में गाय के दूध के बारह गुण सूचीबद्ध हैं, जो अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं – मिठास, शीतलता, कोमलता, चिकनापन, चिकनाई, गाढ़ापन, घनत्व, चिपचिपापन, पतलापन, धीमापन और स्पष्टता, शांति। ओजस (ऊर्जा) में भी ये गुण होते हैं। यह अनुमान लगाया जाता है कि गाय के दूध के सेवन से ओजस में वृद्धि होगी, क्योंकि इसमें भी यही गुण होते हैं। इन्हीं में से एक अमृत दूध है। देसी गाय का दूध बुद्धि को बढ़ाता है, मस्तिष्क के ऊतकों का निर्माण करता है और अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। स्वाभाविक रूप से, गाय के दूध और उससे बने पदार्थों का उपयोग मुख्य रूप से विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों और देवी–देवताओं की पूजा में मिठाइयाँ और अन्य व्यंजन बनाने के लिए किया जाता है। दही, मक्खन, घी और ताजा पनीर इससे उत्पन्न होने वाले कई उत्पादों में से हैं।

भारत में देसी गाय की नस्ल द्वारा उत्पादित A2 दूध में अन्य गाय की नस्लों के A2 दूध की तुलना में बीटाकोस्मोफोरिन–7 (BCM-7) का स्तर कम होता है। देसी दूध में कैल्शियम होता है, जो रक्तचाप कम करता है, स्तन कैंसर से बचाता है और कोलन कैंसर से बचाता है। इसके अतिरिक्त, यह पीएमएस के लक्षणों को कम करता है, माइग्रेन के सिरदर्द से बचाता है, बचपन में मोटापे को रोकता है और वयस्कों में वजन घटाने में सहायता करता है। गाय के दूध में कई विटामिन और पोषक तत्व पाए जाते हैं। लोग सर्दियों से अपनी त्वचा को कोमल बनाए रखने के लिए दूध पीते आ रहे हैं। इसमें अमीनो एसिड होने के कारण यह त्वचा को हाइड्रेटेड रखता है। चूँकि दूध कैल्शियम का प्राथमिक स्रोत है, इसलिए हड्डियों को मजबूत बनाए रखने, ऑस्टियोपोरोसिस से बचने और कैविटी व दांतों की सड़न को रोकने के लिए इसका सेवन करने की सलाह दी जाती है।

देसी गायों का घी

चरक संहिता में कहा गया है कि गाय का घी वसा, ओज, कफ, स्मृति, ज्ञान और पाचन क्षमता को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, यह क्षीणता, उन्माद, विष विकार, पित्त और वात को दूर करता है। सभी चिकनाईयुक्त (तैलीय) पदार्थों में, इसे सर्वोत्तम और सबसे शुभ माना जाता है। यह अनेक उपयोगी गुण प्रदान करता है और शक्ति को हजार गुना बढ़ा देता है। इसी प्रकार भावप्रकाश का दावा है कि 'घी शीतल ऊर्जा वाला, स्वाद में मीठा, स्फूर्तिदायक, आँखों और दृष्टि के लिए अच्छा, पाचन को प्रज्वलित करने वाला, तेज और सौंदर्य प्रदान करने वाला, स्मृति और सहनशक्ति को बढ़ाने वाला, बुद्धि को बढ़ाने वाला, दीर्घायु को बढ़ावा देने वाला, कामोद्दीपक है और शरीर को विभिन्न रोगों से बचाता है।'" (6.18.1)

निष्कर्ष

सरकारों, सामाजिक संगठनों और आम जनता को मिलकर देसी गायों की सँख्या बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए, ताकि हम अपने आरोग्यदायी समाज और पर्यावरण का पुनर्निर्माण कर सकें।

pankajjayswal1977@gmail.com

ललित गर्ग

अंकुरम् गर्भ में संस्कार की पाठशाला का अनूठा अभियान

मानव जीवन की सबसे गहरी जड़ें गर्भ में होती हैं। यह वह प्रथम और सबसे पवित्र पाठशाला है, जहाँ न केवल शरीर बल्कि मनुष्य की चेतना, मूल्य और विचार भी आकार लेते हैं। इस गहन सत्य को आचार्य श्री महाश्रमण की उपस्थिति में अहमदाबाद के कोबा स्थित तेरापंथ सभा भवन में शुरू की गई एक ऐतिहासिक पहल में जीवंत अभिव्यक्ति मिली। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने एक प्रेरक अभियान—'अंकुरम गर्भ संस्कारः भावी जीवन की नींव' का उद्घाटन किया। श्री पंकज मोदी की गरिमामयी उपस्थिति ने इस अवसर की पवित्रता और सौहार्द को और बढ़ा दिया। इस संपूर्ण परियोजना की परिकल्पना आचार्य श्री महाश्रमण की है, जिन्होंने अपने प्रवचन में इस बात पर जोर दिया कि गर्भ केवल भौतिक सृजन का केंद्र नहीं है, यह मानसिक और आध्यात्मिक मूल्यों का उद्गम है। यदि माता का मन शांत, शुद्ध और सकारात्मक है, तो वही स्पंदन शिशु के सँस्कार बन जाते हैं और उसके जीवन को आकार देते हैं। उन्होंने कहा कि अंकुरम गर्भ संस्कार आंदोलन इस पवित्र दर्शन पर आधारित एक उज्जवल भविष्य के निर्माण की दिशा में एक सशक्त कदम है।'

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सुमन नाहटा के नेतृत्व में इस अभियान का उद्देश्य मातृत्व को एक नई दिशा देना है। उनके शब्दों में, एक माँ केवल एक जीवन का निर्माण नहीं करती—वह एक युग का निर्माण करती है। उसके विचार, भावनाएँ और कर्म आने वाली पीढ़ियों की दिशा निर्धारित करते हैं। मातृत्व के आध्यात्मिक अनुशासन के माध्यम से, हम सद्गुणों के बीज बोते हैं। अंकुरम एक मूल्य—उन्मुख आंदोलन है, जो गर्भ से ही करुणा, शांति, संयम और सकारात्मकता का पोषण करने का प्रयास करता है। यह पहल मातृत्व को एक आध्यात्मिक साधना में बदल देती है, जहाँ प्रत्येक माँ भावना, प्रार्थना, संगीत, ध्यान और प्रेम के माध्यम से अपने अजन्मे बच्चे से जुड़ती है।

भारतीय परंपरा में, गर्भावस्था को कभी भी केवल एक जैविक प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि एक पवित्र आध्यात्मिक तपस्या के रूप में देखा गया है। यह लंबे समय से माना जाता रहा है कि बच्चे का चरित्र निर्माण जन्म के समय नहीं, बल्कि गर्भाधान के क्षण से ही शुरू हो जाता है। माँ का गर्भ जीवन की प्रथम पाठशाला है। व्यास, चरक, सुश्रुत और मनु जैसे प्राचीन ऋषियों और उपनिषदों ने गर्भावस्था के दौरान की स्थितियों के महत्व पर बल दिया है। गर्भ संस्कार का शाब्दिक अर्थ है, गर्भस्थ शिशु के शरीर, मन और आत्मा का शुद्ध, सकारात्मक और रचनात्मक ऊर्जा से पोषण करना। गर्भ उपनिषद में कहा गया है कि गर्भवती स्त्री के भाव, विचार, आहार और वातावरण शिशु के मानसिक और भावनात्मक विकास को सीधे प्रभावित करते हैं। इसलिए उसे 'चेतन रचनाकार' कहा गया है। महाभारत में इसके ज्वलंत उदाहरण मिलते हैं—जब

कुंती ने अपने प्रत्येक पुत्र को गर्भ धारण करने से पहले दिव्य मंत्रों का जाप किया, तो उस समय उनकी मानसिक स्थिति ने उनके गुणों को आकार दिया। इसी प्रकार अभिमन्यु द्वारा अपनी माता सुभद्रा के गर्भ में चक्रव्यूह का रहस्य जानने की कथा गर्भ संस्कार की वैज्ञानिक गहराई को दर्शाती है।

आधुनिक विज्ञान अब इस बात की पुष्टि करता है कि शिशु के मस्तिष्क का लगभग अस्सी प्रतिशत विकास गर्भ में ही होता है। गर्भ एक निष्क्रिय भौतिक स्थान नहीं है, यह ऊर्जा और बुद्धि का एक गतिशील केंद्र है, जो शिशु के भावी व्यक्तित्व को आकार देता है। इस अवधारणा को व्यावहारिक बनाने के लिए, अंकुरम कार्यक्रम गर्भवती माताओं को सशक्त बनाने हेतु एक व्यापक प्रशिक्षण मॉडल प्रस्तुत करता है। यह प्रशिक्षण गर्भ संस्कार के पीछे के प्राचीन विज्ञान, शिशु की शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक बुद्धि के सचेतन विकास, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के रख–रखाव, और ध्यान, मंत्रोच्चार, शास्त्र वाचन और सेवा गतिविधियों के माध्यम से भावनात्मक और आध्यात्मिक सामंजस्य के विकास को शामिल करता है। इस कार्यक्रम में दिव्य प्रसव और माताओं एवं नवजात शिशुओं की प्रसवोत्तर देखभाल के लिए मार्गदर्शन भी शामिल है। गर्भ संस्कार अकादमी की संस्थापक डॉ. सोनल जैन जायसवाल इस दृष्टिकोण को उल्लेखनीय समर्पण के साथ साकार करने का नेतृत्व कर रही हैं।

अंकुरम का दार्शनिक आधार आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रेक्षाध्यान में निहित है, जिसने यह स्थापित किया कि ध्यान केवल तपस्वियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के सभी चरणों के लिए सर्वोच्च औषधि है। इसका मूल संदेश–"बोध करो, जानो और रूपांतरित करो", यहाँ अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। जब एक माँ ध्यान करती है, तो उसकी उन्नत चेतना उसके अजन्मे बच्चे की चेतना को प्रकाशित करती है। आचार्य महाप्रज्ञ कहा करते थे, "गर्भ ध्यान का प्रथम मंदिर है। वहाँ उत्पन्न स्पंदन जीवन भर बच्चे के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।" इसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए, आचार्य श्री महाश्रमण ने इस संस्कार को आधुनिक संदर्भ में विस्तारित किया है और कहा है कि भय, अशांति और तनाव से ग्रस्त इस विश्व में, गर्भ संस्कार जैसी पहल मानवता को स्थायी शांति और मूल्यों की ओर ले जा सकती है। मातृत्व स्वयं एक पवित्र तपस्या है और अंकुरम् उस तपस्या को चेतना के उत्सव में बदल देता है।

अंकुरम् गर्भ संस्कार योग, ध्यान और आधुनिक विज्ञान का सुंदर समन्वय करता है। यह इस समझ पर आधारित है कि एक माँ के विचारों और भावनाओं का गर्भस्थ शिशु पर सीधा प्रभाव पड़ता है। योग, प्राणायाम और प्रेक्षा तकनीकों के माध्यम से, गर्भवती माताएँ शांत, संतुलित और आनंदित रहना सीखती हैं, जिससे शांत, स्वस्थ और मूल्य–उन्मुख बच्चे जन्मते हैं। जैसा कि सुमन नाहटा बताती हैं, अंकुरम एक प्रशिक्षण प्रक्रिया है, जो भावी माताओं को गर्भावस्था को एक आध्यात्मिक साधना में बदलना सिखाती है, ताकि प्रत्येक जन्म के साथ, मूल्यों का एक नया सूर्योदय धरती पर उदित हो। यह पहल माताओं से आगे बढ़कर एक राष्ट्र–निर्माण आंदोलन है। एक मूल्य–उन्मुख पीढ़ी ही एक सशक्त समाज और एक शांतिपूर्ण विश्व की सच्ची नींव है। इस प्रकार अंकुरम् गर्भ संस्कार केवल एक धार्मिक कार्यक्रम नहीं बल्कि धर्म, विज्ञान, मनोविज्ञान और संस्कृति को एक सूत्र में पिरोने वाला एक आध्यात्मिक आंदोलन है।

आचार्य श्री महाश्रमण ने ठीक ही कहा है कि संस्कार बचपन में नहीं बल्कि गर्भ में ही शुरू हो जाते हैं। एक माँ जो सजगता, करुणा और संयम के साथ जीवन जीती है, वह एक ऐसे बच्चे को जन्म देती है जो समाज में प्रकाश फैलाता है। अंकुरम् के माध्यम से, हम एक सुसंस्कृत भारत की नींव रख रहे हैं। सुसंस्कृत मातृत्व सुसंस्कृत मानवता की ओर पहला कदम है। बीज से वृक्ष तक, यह पहल एक नई मानवता के पोषण की प्रयोगशाला है। इसे भारत के उन्नीस राज्यों के साथ–साथ नेपाल और भूटान में तेरापंथ महिला मंडलों की पाँच सौ पचास शाखाओं में सत्तर हजार से ज्यादा महिलाओं द्वारा क्रियान्वित किया जायेगा।

अंकुरम् गर्भ संस्कार मातृत्व को एक ध्यानपूर्ण यात्रा में बदल देगा–जहाँ माँ और बच्चे के बीच एक मौन संवाद, जो शब्दों में नहीं, बल्कि भावनाओं के माध्यम से व्यक्त होगा। यह धर्म, योग और शांति का संवाद है। यह पहल एक नई चेतना जगाती है कि अगर हम गर्भ से ही मूल्य–निर्माण शुरू कर दें, तो हम दुनिया से हिंसा, बेचैनी और नैतिक पतन को मिटा सकते हैं। जैसा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने बहुत खूबसूरती से कहा है कि 'जब एक माँ ध्यान में प्रवेश करती है, तो मानवता का भविष्य प्रार्थनापूर्ण हो जाता है।' भारतीय चिंतन में, मातृत्व को हमेशा से ही सर्वोच्च देवत्व–जननी, धात्री, अन्नपूर्णा और भूमिका देवी के रूप में पूजनीय माना गया है। माँ की गोद मूल्यों का सबसे बड़ा पवित्र स्थान है। हमारे महाकाव्य, रामायण और महाभारत, मातृ कृपा के अनगिनत आदर्शों को दर्शाते हैं–कौशल्या की कोमलता, सीता का साहस, कुंती का धैर्य और गार्गी–मैत्रेयी का ज्ञान। भारतीय संस्कृति में मातृत्व केवल एक रिश्ता नहीं है, यह एक आध्यात्मिक शक्ति, एक पवित्र ऊर्जा और समस्त सृष्टि का स्रोत है। गर्भ एक दिव्य प्रयोगशाला है जहाँ न केवल शरीर बल्कि मानवता की आत्मा और मूल्यों का भी निर्माण होता है।

तनाव, प्रतिस्पर्धा और कृत्रिमता से ग्रस्त आज के भौतिकवादी संसार में, गर्भ संस्कार का पुनरुत्थान मानवता की जड़ों को एक बार फिर पोषित करने का मार्ग प्रस्तुत करता है। वैज्ञानिक अध्ययन अब इस बात की पुष्टि करते हैं कि एक माँ की मानसिक शांति, ध्यान, संगीत, योग और संतुलित आहार का अजन्मे बच्चे की बुद्धि, स्वास्थ्य और व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अंततः, अंकुरम् का संदेश शाश्वत है–केवल सुसंस्कृत माताएँ ही सुसंस्कृत संतान को जन्म दे सकती हैं और ऐसी संतानें स्वर्ण युग की नींव रखेंगी।

lalitgarg11@gmail.com

सनातनी परंपरा की वाहक व संरक्षक
जनजातीय संस्कृति

– डॉ. रेखा नागर (प्राध्यापक)

केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

जनजातियाँ वृहत्तर हिन्दू समाज का अविच्छिन्न अंग है। जब हम भारत की सामाजिक संरचना की बात करते हैं, तब हमें यह देखना चाहिए कि हम स्वयं किस समाज के अंग हैं, उसे समझने की हमारी दृष्टि अपनी भारतीय है अथवा नहीं। वह इसलिए कि भारतीय चिंतन और मनन की पद्धति, जिसमें विश्व कल्याण की भावना निहित है। जिसमें वसुधैव कुटुम्बकम् और अपनी संस्कृति पर गर्व करने का भाव है। वहीं भारत के किसी समाज की सामाजिक, साँस्कृतिक और आध्यात्मिक विशेषताओं तथा भारतीयता पर प्रश्न करने का अधिकारी हो सकता है। क्योंकि एक भारतीय ही भारत के किसी समाज की संरचना को सही ढ़ंग से समझ सकता है, कोई विदेशी धर्म से प्रभावित या भारत विरोधी विचारधारा से युक्त व्यक्ति इसका वास्तविक और सही विश्लेषण कभी नहीं कर सकता। एक कहावत यहाँ सटिक बैठती है कि 'जिसके मुँह में पहले से ही नमक की ढेली है, उसे मिश्री का असली स्वाद कभी नहीं आयेगा।'

ब्रिटिश काल में यूरोपीय पादरियों द्वारा जनजातियों में व्याप्त जिस सुरापान, मांसाहार, उन्मुक्त जीवन–शैली और अंधविश्वास इत्यादि को जनसँस्कृति कहा गया था, उसे वैसा ही मान लिया गया। यह भी जानने की कोशिश नहीं की गई कि उनके जीवन के सारे सुंदर पहलुओं, चाहे वह उनके नृत्य हो, संगीत हो या पंचतत्वों की पूजा हो, अपने देवी–देवताओं के प्रति असीम आस्था हो, या अतिथि देवो भवः की निश्चल भावना हो। इन सभी पहलुओं को परिष्कृत कर भारतीय सभ्यता में ग्रहण किया गया और सम्मान दिया गया है। लेकिन वास्तविकता यह है कि अँग्रेजों के आने तक जनजाति समाज अपने पूर्व मूल स्वभाव में ही जीवन–यापन कर रहा था, जबकि अन्य समाज अलग स्वरूप में दिखाई दे रहा था। इसी का फायदा उठाते हुए अँग्रेज द्वारा सभ्य और असभ्य जीवन शैली का हवाला देते हुए मिशनरी शिक्षा के माध्यम से उन्हें जेंटलमैन बनाने और अन्य भारतीय समाज से अलग बताने की कोशिश की गई और वे काफी हद तक इसमें सफल भी रहे। क्योंकि उसी का नतीजा आज धर्मांतरण के जहरीले विष के रूप में हमारे सामने है। यहाँ सभी भारतीयों को यह ज्ञात होना चाहिए कि भारत का एक ऐसा वैश्विक तथ्य, जिसकी सर्वदा अनदेखी की गई। वह तथ्य यह है कि अँग्रेजों के आगमन से पूर्व तक भारतीय समाज, 'वनवासी, ग्रामवासी तथा नगरवासी' इन तीनों स्तरों में ही रह रहा था। इन तीनों स्तरों में हिन्दू सभ्यता की अपनी विशेषताएँ थी। प्राचीन ग्रंथों और इतिहास को ठीक से देखा जाए, तो सर्वत्र यह उदाहरण देखने को मिल जायेंगे कि इन तीनों स्तरों के लोग किसी भी स्तर पर जाने के लिए स्वतंत्र थे। सनातन परंपरा और जनजाति समाज की जीवन पद्धत्ति एक दूसरे के पूरक हैं। संवैधानिक रूप से देखा जाए तो सन 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 705 जनजातीय समूहों को 'अनुसूचित जनजाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इन जनजातियों की कुल आबादी भारत की कुल जनसँख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत है। इनमें गोंड, भील, संथाल, मुंडा, कोरकू, उरांव, गारो, खासी, भिलाला, बारेला, पटलिया, भारिया, अंगारी भूटीया, चेन्चु, कोया, कोटाबा आदि प्रमुख है। भारत की इस विशाल जनसँख्या को किस प्रकार अलग बताकर अन्य भारतीयों से दूर किया जाए, यह षड्यंत्र अँग्रेजी शासनकाल से लेकर अब तक जारी है। कारण स्पष्ट है कि जनजाति समाज को

अन्य हिन्दू समाज से अलग कर दिया, तो भारतीयों की शक्ति का ह्रास होगा, जिससे विदेशी विचारधारा वाले षड्यंत्रकारियों को एक बार फिर से भारत की शक्ति को बांटने और उसे कमजोर करने का अवसर मिल जायेगा क्योंकि सबसे ज्यादा खतरा उन्हें जनजाति समाज की वीरता, स्वाभिमान, स्वावलंबन और देशभक्ति से है, जिन्होंने किसी भी परिस्थिति में गुलामी स्वीकार नहीं की। वे भारतवर्ष के अग्रणी प्रहरी के रूप में सदैव बलिदान देते आये। जनजातियाँ हिन्दू हैं या नहीं यह प्रश्न तो होना ही नहीं चाहिए, क्योंकि किसी समाज की पूजा–पद्धति का विधान या पहनावा अलग होने से उसे मूल जड़ों से अलग नहीं कर सकते। आज कुछ षड्यंत्रकारी प्रश्न खड़े कर रहे हैं और जनजाति समाज को असमंजस में डालने का प्रयास किया जा रहा है, तो इसका उत्तर देने की आवश्यकता आन पड़ी है। कुछ उदाहरणों और प्रसंगों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं।

- जब से मनुष्य ने साहित्य लेखन का कार्य प्रारंभ किया है, तभी से जनजातियों के बारे में वर्णन मिलता है। विश्व के प्रथम महाकाव्य वाल्मीकि रामायण में माता शबरी और वनवासी राजा निषादराज का वर्णन है।
- वनवासकाल के दौरान लंका विजय तक विभिन्न वन क्षेत्रों के योद्धाओं (वनवासियों) ने उनका पूरे मनोयोग से समर्थन किया।
- महाभारत काल (द्वापर युग) के दौरान एकलव्य, हिडिम्बा, घटोत्कच, बर्बरीक (आज खाटूश्याम) आदि वीर योद्धाओं का वर्णन है।
- पश्चिमी लेखन से लगभग एक हजार वर्ष पहले (सातवीं शताब्दी में) कवि बाणभट्ट ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'कादम्बरी' में शबर वर्णननम् –का एक पूरा अध्याय ही लिखा हुआ है। उन दिनों मध्यप्रदेश की जनजातियों को 'शबर' कहा जाता था।
- भारतीय धर्मो (हिन्दू, बौद्ध, जैन) और जनजातीय धर्म में मूलभूत समानताएँ है। सभी प्रकृति पूजक और बहुदेववादी हैं।
- प्राचीनकाल से आरण्यक कोई अलग समाज नहीं था। केवल आर्थिक संदर्भों में वह अलग था। वह मूल रूप से वनोपज पर आधारित था, जबकि अन्य समाज मुख्य तौर पर कृषक था। विश्वभर में भारत में ही प्रकृति इतनी समृद्ध थी कि यहाँ समाज तीन स्तरों में अर्थात् नगरों, ग्रामों और वनों में रह कर जीवन यापन करता था। उनमें कोई धार्मिक भेद नहीं था।
- यदि भारत की जनजातियाँ हिन्दू नहीं हैं, तो क्या वे "विश्व जनजातीय समूह की धर्म सँस्कृति और समाज का हिस्सा है"? ऐसे प्रश्न अब उठाये जा रहे हैं। ये भारत के कुछ ऐसे जनजातीय संगठन हैं, जिनके हित विदेशों से बंधे हैं। वे जनजातीय समाज को गैर हिन्दू होने के फायदे बतला रहे हैं, और उन्हें हिंदूवादी संगठनों से दूर रहने का आग्रह कर रहे हैं।
- जनजाति समाज के ही पूर्व लोकसभा उपाध्यक्ष डॉ. कड़िया मुण्डा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में कहते हैं कि 'जनजाति समाज ही असली सनातनी है। और ये हमारे साँस्कृतिक मूल्यों के प्रहरी भी हैं।
- जनजाति समय से प्रत्यक्ष संवाद करके कोई भी यह जान सकता है कि उनकी परंपराएँ विशुद्ध वैदिक परंपराओं के निकट हैं। दूसरा उन्हें पिछड़ा कहना उनका घोर अपमान है, क्योंकि अँग्रेजों के आगमन के पूर्व भारत में जनजातीय समाज कभी पिछड़ा माना ही नहीं गया, इस बात की पुष्टि हेतु अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। परंतु अँग्रेजों ने शासन करने की सुविधा तथा वनक्षेत्रों में उपलब्ध खनिज पदार्थो व प्राकृतिक संसाधनों की लूट को सरल बनाने के लिए जनजातीय क्षेत्रों को अलग–थलग करने का प्रयास किया था।

यद्यपि वनों में रहना यूरोपीय दृष्टि से पिछड़ापन, असभ्य और अविकसित माना जाता था। जबकि वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि भारतीय परंपरा में विकसित और सभ्य लोग ही वनों में रहते थे। वर्णाश्रम व्यवस्था में संपूर्ण जीवन काल (100 वर्षों) में व्यक्ति अपनी आयु का केवल एक चौथाई यानी 25 वर्ष ही नगरों में या ग्रामों में व्यतीत करता था, शेष जीवन वह वनों में ही रहता था। इस प्रकार हमारी सामाजिक व्यवस्था से अनजान होने के कारण जनजाति समाज के बारे में जो भी लिखा गया, वह उन्हें जबरन आदिम साबित करने के उद्देश्य से लिखा गया। विरोधियों को यह याद रखना चाहिए कि धरती पूजा, गोत्र परंपरा, शिव पार्वती पूजा, प्रकृति पूजा, देवलोक व अनेक धार्मिक परंपराएँ जनजातियों व सर्व समाज में एक जैसी ही है। जिन बिरसा मुण्डा को आज पूरे देश में भगवान के रूप पूजा में जा रहा है, उन्होंने विधर्मियों का साथ छोड़ कर सनातन सँस्कृति को स्वीकार किया। संपूर्ण गौड समाज बड़ादेव के रूप में शिव की उपासना करता है। गोंडवाना के शासक सदैव से भैरवनाथ व माँ भवानी की पूजा, अर्चना बड़ी श्रध्दाभाव से करते आ रहे हैं।

भारत की लगभग सभी जनजातियाँ प्रत्येक शुभकार्य के प्रारंभ में श्री गणेश की पूजा–अर्चना किसी न किसी प्रतीक रूप में अवश्य करती हैं। न केवल पूजा बल्कि प्रत्येक देवी देवता से संबंधित लोकगीत, भजन, गायन आदि भी करते हैं। फिर भी जाने क्यों जनजातियों को हिन्दूओं से अलग दिखाने व भारत की साँस्कृतिक एकता को छिन्न–भिन्न करने के लिए एक साजिश के तहत झूठा इतिहास व किताबें लिखी गई, जिन्हें अब आधार मानकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

दूसरी ओर आर्य और अनार्य के रूप में भेद दिखाने की नाकाम कोशिश जारी है, जबकि यह ज्ञात होना चाहिए कि आर्य जाति नहीं गुणवाचक शब्द है।

जो व्यक्ति अच्छा होता है, जिसका आचरण समाज के लिए अनुकरणीय हो, जो दूसरों के लिए आदर्श हो, उसे आर्य कहा जाता है, जैसे कि सीताजी श्रीराम को, श्रीकृष्ण विदुर जी को, रामजी महर्षि वाल्मीकि को, आर्य कह कर पुकारते थे। जबाकि विदूरजी दासीपुत्र एवं वाल्मीकिजी शुद्र समाज से आते थे, लेकिन उनके ज्ञान और विद्वता के कारण वे पूजे गए और आर्य कहलाये। यह तर्क दिया जाता है कि हिन्दू या

तथाकथित आर्य अन्य आक्रांताओं की तरह बाहर से आये हैं, यहाँ के मूलनिवासी नहीं हैं तो इसका कोई प्रमाण तो होगा कि वे पहले कहाँ के निवासी थे। जैसे ईसाई पूरी दुनियाँ में निवास कर रहे हैं लेकिन उनका सबसे बड़ा श्रद्धा का केन्द्र वेटिकन सिटी तथा ऐतिहासिक तीर्थस्थल येरुशलम है। वैसे ही मुस्लिमों के श्रद्धा का केन्द्र मक्का मदिना है। उसी प्रकार हिन्दू या आर्यों का मूल श्रद्धा का केन्द्र भी वहीं होना चाहिए था, जहाँ के वे मूलनिवासी होते। लेकिन इसका जवाब किसी विरोधी के पास नहीं है और होगा भी नहीं क्योंकि समस्त हिन्दू समाज (आदिवासी सहित) इस भारत देश के ही मूलनिवासी हैं, इसलिए उनके कुल देवी–देवताओं का पूजा स्थल सुदूर किसी जंगल में या गाँवों में है। अर्थात इस भारत भूमि के ही किसी क्षेत्र में स्थापित है। अगर ऐसा नहीं होता, तो ईसाईयों और मुस्लिमों की तरह हिन्दू समाज भी अपने पुरखों या कुल देवताओं की पूजा हेतु प्रतिवर्ष किसी दूसरे देशों में जाते। यदि अन्य किसी देश में उनके श्रद्धा का केन्द्र होता, तो जिस प्रकार इजराइल के लोगों में येरुशलम को पाने के लिए संघर्ष किया, वैसे ही हिन्दू भी करते। किन्तु हिन्दुओं ने तो श्रीराम जन्मभूमि के लिए संघर्ष किया, क्योंकि उन्हें पता है कि श्रीराम उनके आराध्य और भारत के प्रारंभिक पुरखे ही उनके वंशज हैं।

सृष्टि में जीवन के प्रारंभ से ही नगर या ग्राम नहीं बने थे। पहले तो सभी वनों में ही निवास करते थे। बाद में सभ्यता के विकास के साथ ग्राम या नगर बने। लेकिन भारतीय समाज का एक हिस्सा, अभी तक वनों में ही निवासरत है तो इस आधार पर उन्हें अन्य समाज से अलग करना या उसका हिस्सा नहीं मानना तर्क संगत नहीं है। प्रकृति पूजा की बात करें, तो पंचतत्वों की पूजा न केवल जनजाति समाज बल्कि पूरी श्रद्धा के साथ हिन्दू समाज करता है।

उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली एक जनजाति जिसका नाम 'रामनामी जनजाति है। इस जनजाति में अपने शरीर पर राम का नाम गुदाने की परंपरा है। उसके अलग प्रकार भी है। जैसे शरीर के किसी भी हिस्से में रामनाम गुदाने वाले रामनामी। माथे पर केवल दो रामनाम लिखवाने वाले शिरोमणि' और पूरे माथे पर रामनाम लिखवाने वाले सर्वांग रामनामी तथा पूरे शरीर पर लिखवाने वाले को नखशिख रामनामी कहा जाता है। इससे बड़ा हिन्दुत्व का उदाहरण और क्या होगा। उपरोक्त उदाहरणों और विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दू आदिवासी, वनवासी, ग्रामवासी, नगरवासी, मूलनिवासी, आर्य और भारतीय ये सभी एक–दूसरे के पर्यायवाची हैं, विरोधी नहीं। लेकिन कुछ लोग या संगठन जिनकी श्रद्धा भारत के बाहर है, वे धर्म परिवर्तन के लिए इन शब्दों का गलत उपयोग करते हैं। हम जानते हैं कि मानव समाज के विकास के साथ धीरे–धीरे ज्ञान बढ़ता गया, ऋषि–मुनि हुए, गुरु हुए, पूजा–पाठ के विभिन्न प्रकार हुए लेकिन प्रारंभ में तो अग्नि, जल, वायु, धरती, आकाश, जीव–जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की ही पूजा की जाती थी और जनजाति समाज आज इन्हीं की पूजा करता है। इसलिए इस धरती पर यदि असली सनातनी कोई है, तो वह जनजाति समाज है, क्योंकि बाकी तो जैन, बौद्ध, शैव–वैष्णव आदि पंथों में बदल गए। लेकिन हमारा मूलरूप आज भी एक ही है। अंत में एक बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि कोई भी समाज तब तक अपना स्थान बनाये रख सकता है, जब तक वह स्वतंत्रचेता है, जागरूक है और अपनी पहचान स्वयं कर सकता है तथा दूसरों की दी गई पहचान में छिपी खोट को समझ सकता है और उसे उजागर करने की हिम्मत रखता है। तभी वह विश्व या देश में अपना अस्तित्व बनाये रख सकता है, अन्यथा आपको दिग्भ्रमित करने वालों की कमी नहीं है।

अमरकंटक (मध्य प्रदेश) में अखिल भारतीय युवा संत चिंतन वर्ग का आयोजन

अखिल भारतीय युवा संत चिंतन वर्ग, अमरकंटक म.प्र. कार्तिक शुक्ल चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी विक्रम संवत् 2082, 25–27 अक्टूबर 2025 का शुभारम्भ विहिप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, पूज्य संत नर्मदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता तथा आदरणीय दिनेशचन्द्र जी की उपस्थिति में हुआ।

श्री आलोक कुमार जी ने उद्घाटन सत्र में कहा कि 100 वर्ष की संघ यात्रा, 60 वर्ष की विहिप की यात्रा का सिंहावलोकन करने पर ध्यान आता है कि हिंदू होने पर संकोच करने से हिंदुत्व पर गर्व होता है। आज अपने आप को हिंदू कहने में गर्व महसूस करते हैं। आज राजनीति के केंद्र में हिंदुत्व है। कारसेवक गोलियों से घायल होने पर भी अपने खून से जय श्रीराम लिख कर बलिदान हुए।

हमें अपने परिवार में हिंदुत्व आधारित जीवन जीने का संकल्प लेना होगा। कुटुंब में सभी जनों को एक साथ नियमित संवाद करना चाहिए। समरसता के संदर्भ में उन्होंने कहा कि सभी जीव में ईश्वर का वास है, तो मनुष्य–मनुष्य में भेद कैसे ? हम सभी पाँच तत्वों से बने हैं तो भेद क्यों ? इसे समाप्त करने में विशेष भूमिका पूज्य संतों को निभानी होगी। तमिलनाडु की एक बस्ती का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि एक संत के मोहल्ले में आगमन पर मांस–मदिरा का त्याग कर दिया। संत को खीर खिलाने में संकोच हो रहा था, संत द्वारा माई भूखा ही रखोगी कि कुछ खिलाओगी तो पूरा मोहल्ला आनंद के आँसू से सरोबार हो गया।

आयु एवं आयुर्वेद की परिभाषा

– मुरारी शरण शुक्ल (सह सम्पादक हिन्दू विश्व)

शरीर, इन्द्रिय, मन तथा आत्मा के संयोग को आयु कहते हैं। शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारित जीवितम्। (चरक सं 1/1/41) आयु के चार समानार्थी शब्दों का वर्णन चरक संहिता में मिलता है– धारि, जीवित, नित्यग और अनुबन्ध।

धारि–शरीर, इन्द्रिय, मन तथा आत्मा, इन्हें परस्पर धारण करने का स्वभाव होने से आयु को धारि कहते हैं। धारि का अर्थ वह है जो कुछ धारण करता है, या, जो जीवित रखता है। इस संदर्भ में, आयु को जीवन "धारण करने वाली शक्ति" के रूप में समझा जा सकता है। इसीलिए आयुर्वेद में, "आयु" को धारण करने वाला "धारि" कहा जाता है, जो शरीर को क्षय होने से बचाता है।

जीवित–'जीवित' का अर्थ है जीवनी शक्ति को बनाए रखना। आयुर्वेद में "आयु" का व्यापक अर्थ जीवनकाल है, जो शरीर, इंद्रिय, मन और आत्मा के संयोजन से परिभाषित होता है। "जीवित" रहने का आयुर्वेदिक लक्ष्य केवल रोगों से मुक्त होना नहीं है, किन्तु शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ, संतुलित और प्रसन्न रहना है। स्वस्थ जीवन शैली (दिनचर्या, ऋतुचर्या) का पालन करके दीर्घायु और आरोग्य प्राप्त करना ही वास्तविक जीवित होना माना जाता है। आयुर्वेदिक दर्शन में, आत्मा के साथ शरीर को "कर्म पुरुष" कहा जाता है। "जीवित" शरीर ही कर्मों के लिए जिम्मेदार होता है और संपूर्ण आयुर्वेद इस कर्म पुरुष को उत्तम पुरुष बनाने के लिए ही है।

नित्यग–यावश्चेतन शरीर आयु के रहने से इसे नित्यग भी कहा जाता है। नित्य प्रतिक्षण गमनशील शिथिलीभाव होने से नित्यग कहते हैं। जो हर पल निरंतर गतिशील रहता है, उसे नित्यग कहते हैं। यह जीवन की निरंतरता और शरीर में नित्य होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों को इंगित करता है। जीवन जीने के क्रम में अच्छे या बुरे, उचित या अनुचित आहार, व्यवहार, सोच, चिंतन इत्यादि के परिणामस्वरुप शरीर में नित्य अनेकविध परिवर्तन होते हैं, शरीर में कुछ प्रतिकूलता आने से हम उसके निराकरण के लिए भी अनेक उपक्रम करते हुए आयु और शरीर को नित्य संवारने का यत्न करते हैं, आयु की इस सम्भाल की प्रवृति और प्रकृति के कारण भी इसे नित्यग कहते हैं।

अनुबंध– अपरापर शरीर के साथ सम्बन्ध कराने से इसे अनुबन्ध कहते हैं। अनुबन्ध जीवन की निरंतरता और शरीर, इंद्रियों, मन और आत्मा के संयोजन को कहते हैं। यह आत्मा (चेतना) के शरीर (शारीरिक संरचना) से जुड़े रहने की स्थिति है, जिसके कारण जीवन संभव होता है। इस संबंध के समाप्त होने को ही मृत्यु कहा जाता है।

आयुर्वेद

जिस शास्त्र में हितमय, अहितमय, सुखमय, दुखमय, आयु तथा आयु के लिए हितकर और अहितकर द्रव्य, गुण, कर्म, आयु का प्रमाण एवं लक्षण द्वारा आयु का वर्णन होता है, उसका नाम आयुर्वेद है।

सुखायु–दुखायु

जिनका शरीर और मन रोगरहित है, जो यौवन, उत्साह, बल, पौरुष, यश, पुरुषत्व, साहस, कला और विज्ञान के ज्ञान, स्वस्थ इन्द्रियाँ, इन्द्रियग्राह्य विषय, इन्द्रिय–शक्ति, धन और भोग–विलास की विविध वस्तुओं से युक्त हैं, जो जो चाहें प्राप्त कर सकते हैं और जहाँ चाहें विचरण कर सकते हैं, वे सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। इसके विपरीत होने पर दुखायु होता है।

हितायु– अहितायु

जो सभी प्राणियों के शुभचिंतक हैं, जो दूसरों के धन की इच्छा नहीं करते, जो सत्यवादी, शांतिप्रिय हैं, जो कार्य करने से पहले विचार करते हैं, जो सतर्क रहते हैं, जो जीवन के तीन महत्वपूर्ण उद्देश्यों (धर्म, धन और काम) को एक दूसरे को प्रभावित किए बिना अनुभव करते हैं, जो वरिष्ठों का सम्मान करते हैं, जो कला, विज्ञान और शांति के ज्ञान से संपन्न हैं, जो बड़ों की सेवा करते हैं, जो काम, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार और घमंड पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं, जो निरंतर विभिन्न प्रकार के दान, ध्यान, ज्ञानार्जन और शांत जीवन (एकांत) में लगे रहते हैं, जिनके पास पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान है और वे इसके लिए समर्पित हैं, जो वर्तमान के साथ–साथ अगले जीवन के लिए भी काम करते हैं, और स्मृति और बुद्धि से संपन्न हैं, वे एक उपयोगी हितायु जीवन जीते हैं, जबकि, अन्य लोग जो ऐसा नहीं करते, अहितायु जीवन जीते हैं।

वय और आयु में अंतर

वय को जन्म से लेकर अब तक व्यतीत हुए समय के अनुरूप शरीर की अवस्था के रूप में परिभाषित किया गया है। चरक और सुश्रुत दोनों का कहना है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति का निर्धारण करने से पहले, चिकित्सक को जीवन काल (वय), रोग की शक्ति और तीव्रता के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए जाँच करनी चाहिए। (सुष. साम. सूत्र. 35.3)

हुतात्मा दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन

अशोकनगर। विश्व हिंदू परिषद–बजरंग दल द्वारा हुतात्मा दिवस के अवसर पर अमर शहीद भगत सिंह विद्यालय, पूजा कॉलोनी, माता मंदिर रोड पर स्वास्थ्य परीक्षण शिविर एवं रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें विश्व हिंदू परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री जितेंद्र सिंह पवार जी ने संबोधित करते हुए कहा कि रक्तदान महादान है, वह परम पुनीत कार्य है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष हो गए हैं, जो समाज परिवर्तन के लिए काम कर रहा है। संघ के गर्भ से ही विश्व हिंदू परिषद का सृजन हुआ है। परम पूज्य द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरु जी ने विश्व हिंदू परिषद की स्थापना हिंदू मानबिंदुओं की रक्षा के लिए मानव सेवा के लिए की। रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं है। आज देश में लव जिहाद, लैंड जिहाद जैसी राष्ट्र विरोधी शक्तियों से लड़ने के लिए हमें जागृत होना होगा।

इस अवसर पर प्रांत अर्चक मंदिर प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि रक्तदान करने से किसी प्रकार की कोई कमजोरी नहीं होती, यह अंधविश्वास को दूर करें। रक्त किसी फैक्ट्री में नहीं बनता। हमारा रक्त किसी की जान बचाए इससे परम पुनीत कार्य कोई नहीं हो

सकता, इसलिए हमें रक्तदान कर दूसरों के शिराओं में हमारा खून चलेगा, तो हमको बहुत पुण्य प्राप्त होगा। बजरंग दल प्रांत संयोजक अवधेश तिवारी द्वारा युवाओं से आवाहन किया गया कि बजरंग दल युवाओं का संगठन है, युवा राष्ट्रभक्ति के लिए, समाज की रक्षा के लिए, धर्म की रक्षा के लिए, अपने स्वास्थ्य का परीक्षण के साथ ही योग व्यायाम करें। युवा सशक्त और मजबूत होगा। युवा नशे से दूर रहें, तभी हमारा देश मजबूत होगा।

इस अवसर पर विभाग मंत्री दिलीप सिंह कुशवाहा, विभाग संगठन मंत्री वीर सिंह लोधी, कार्यक्रम का संचालन एवं आयोजन बजरंग दल विभाग संयोजक वेदराम लोधी द्वारा किया गया। क्षेत्र संगठन मंत्री जितेंद्र सिंह पवार, प्रांत अर्चक प्रमुख दीपक मिश्रा, अशोक रघुवंशी, वेदराम लोधी, आशी राजपूत, हर्षित शर्मा सहित 44 लोगों ने रक्तदान किया। इस अवसर पर 44 यूनिट रक्तदान हुआ, 1250 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, 450 मरीजों को दवाएँ दी गईं और बड़ी सँख्या में मरीजों को लाभ मिला।

deepakmishravhp@gmail.com

काशी प्रांत की प्रांतीय बैठक सम्पन्न

विहिप–धर्मप्रसार विभाग की ओर से काशी प्रांत की वार्षिक प्रांतीय बैठक गत 11, 12 अक्टूबर 2025 को चुनार स्थित सुरभी संस्थान में सम्पन्न हुई। इस बैठक में धर्मप्रसार विभाग की प्रांतीय टोली, 10 चयनित जिलों से जिला टोली, अन्य 12 जिलों से जिला धर्मप्रसार प्रमुख, बजरंग दल के सुरक्षा प्रमुख एवं धर्मरक्षकों को मिलाकर कुल 72 कार्यकर्ता उपस्थित थे।

गत कार्यों की समीक्षा, कार्य विस्तार करने की योजना, आगामी कार्यक्रम जैसे अक्टूबर में संत प्रवास, नवम्बर में समर्पण दिवस एवं दिसम्बर में धर्मरक्षा दिवस के बारे में सघन चर्चा करते हुए सुचिन्तित योजना बनायी गयी,

इसके साथ–साथ जिस प्रखण्ड में धर्मरक्षक कार्य कर रहे हैं, उस प्रखण्ड में त्रैमासिक ग्राम टोली कार्यकर्ताओं का प्रखण्ड स्तर पर तीन–चार घण्टे के लिए वर्ग व बैठक करने की भी योजना बनायी गयी।

कार्य की स्थिरता और दृढ़ता के लिए जिला स्तर से ऊपर के कार्यकर्ताओं ने एक–एक प्रखण्ड को गोद लिया। बैठक में क्षेत्रीय प्रमुख श्री प्रदीप कुमार जी पाण्डेय, अखिल भारतीय प्रमुख श्री सुधांशु मोहन जी पटनायक एवं सुरभी सँस्थान के प्रमुख श्री सूर्यकान्त जालान ने कार्यकर्ताओं को भिन्न–भिन्न सत्रों में पाथेय प्रदान किया। प्रांत प्रमुख श्री नरसिंह त्रिपाठी और सह प्रमुख श्री विश्वम्भर दुबे और सँस्थान के सह प्रमुख श्री अमित जी ने समस्त बैठक का संचालन एवं व्यवस्था संभाली।

हिंदू हेरिटेज सेंटर में दीपावली उत्सव का आयोजन

रोटोरुआ में हिंदू हेरिटेज सेंटर 25 अक्टूबर 2025 को परिवारों के रूप में जीवंत हो उठा। बच्चों की दीपावली–प्रकाश, खुशी और साँस्कृतिक गौरव का त्योहार मनाने के लिए एकत्र हुए। यह कार्यक्रम रंग, संगीत और प्रतिभा का एक जीवंत प्रदर्शन था, जो रचनात्मकता और भावना को उजागर करता था। समुदाय के युवा सदस्यों की दीपावली के बाद का यह विशेष उत्सव युवा दिलों और दिमागों को समर्पित था। बच्चों के लिए सच्ची भावना और अर्थ का अनुभव करने का आकर्षक, शैक्षणिक और आनंददायक तरीका था। दीपावली–रोशनी का त्योहार। कार्यक्रम में मेहंदी और रंगोली डिजाइन, कहानी सुनाना, शामिल थे और मनमोहक साँस्कृतिक प्रस्तुतियों की एक श्रृंखला भी थी। हाल के वर्षों में, दीपावली के कई आयोजन अधिक व्यावसायिक प्रकृति के हो गए हैं, जिनमें अक्सर घाटा हो रहा है। त्योहार के गहरे महत्व को स्पर्श करें। बच्चों की दीपावली उत्सव का उद्देश्य युवाओं की मदद करने के लिए है–विशेष रूप से न्यूजीलैंड में जन्में और पले–बढ़े लोगों की। जानिए क्यों मनाई जाती है दीपावली? ध्यान शिक्षा, भागीदारी और परिवार पर है संबंध और कालातीत मूल्यों पर यह प्रतिनिधित्व करता है। अंधेरे पर प्रकाश की जीत, अज्ञान पर ज्ञान और बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व है दीपावली।

इस वर्ष के आयोजन का एक प्रमुख आकर्षण मनमोहक भरतनाट्यम प्रदर्शन था, जो पद्मा स्कूल ऑफ इंडियन क्लासिकल डांस, ऑकलैंड के प्रतिभाशाली बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया। तिकड़ी–अबिनया, विजय कुमार, अबिरामी मनिकम और मोहिता कोसीरेड्डी ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सुंदर हरकतें और अभिव्यंजक कहानी, गहराई और लालित्य को खूबसूरती से दर्शाया गया। 'हमने 2008 और 2012 के बीच सभी रोटोरुआ दीपावली उत्सवों में भाग लिया, जब डॉ. गुना मैगेसन ने इनका बड़े पैमाने पर समन्वय किया। जब हमने सुना कि रोटोरुआ में इस वर्ष दीपावली का शुभारंभ हो रहा था, हम भाग लेने, समर्थन करने और हिस्सा बनने के लिए उत्सुक थे। गुरु पद्मलता देव ने कहा कि पद्मा स्कूल ऑफ इंडियन क्लासिकल डांस का यह ऐतिहासिक शुरुआत है। हमारा आशीर्वाद आयोजकों के साथ है। स्थानीय बच्चे–विशेष रूप से प्लेटोपिया एडुकेयर अर्ली चाइल्डकेयर सेंटर और विभिन्न से। रोटोरुआ प्राथमिक विद्यालय ने एक मार्मिक राम दरबार प्रस्तुति में मुख्य भूमिका निभाई, जो इसकी भक्ति, ईमानदारी और आकर्षण के लिए हार्दिक सराहना मिली। कार्यक्रम में गायन, भांगड़ा नृत्य और साँस्कृतिक प्रस्तुतियों का एक जीवंत मिश्रण प्रस्तुत किया गया, जो प्रत्येक प्रदर्शन को दर्शाता है।

रोटोरुआ की युवा पीढ़ी की ऊर्जा, आत्मविश्वास और रचनात्मकता। उत्सव की भावना को बढ़ाते हुए, प्रत्येक भाग लेने वाले परिवार ने पहले घर का बना मीठा व्यंजन तैयार किया। यह घटना जिसे बच्चों ने उत्सव के दौरान गर्व से दूसरों के साथ साँझा किया, इसका प्रतीक है। दीपावली उदारता, एकजुटता और खुशी की भावना का प्रतीक है। दीपावली प्रकाश, एकता और आशा का जश्न मनाने का समय है। इस वर्ष बच्चों की दीपावली थी। विशेष रूप से सार्थक क्योंकि इसने हमारे युवाओं को अपनी विरासत से जुड़ने और इसे साँझा करने की अनुमति दी। व्यापक समुदाय के साथ गर्व है, "राधिका छिब्बर और ज्योति कुमार, समन्वयक ने कहा।

यह उत्सव साँस्कृतिकता को बढ़ावा देने के लिए हिंदू हेरिटेज सेंटर की चल रही प्रतिबद्धता को दर्शाता है। रोटोरुआ में समझ, अंतरपीढ़ीगत संबंध और सामुदायिक भलाई। यह भी साँस्कृतिक जागरूकता और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए केंद्र की व्यापक पहल का हिस्सा है। सभी पृष्ठभूमियों के युवाओं और परिवारों के बीच। "डॉ गुना मगेसन, न्यूजीलैंड की हिंदू परिषद के अध्यक्ष ने कहा कि "इस तरह के आयोजनों के माध्यम से हम बच्चों के बीच हमारे विविध समुदाय को एकजुट करने वाले बंधनों को मजबूत करते हुए सँस्कृति और मूल्यों की गहरी सराहना को बढ़ावा देने की उम्मीद करते हैं।

hindu.nz@gmail.com

प्रयागराज (उ.प्र.) में आयोजित धर्मरक्षा निधि कार्यक्रम में सिख समाज के बंधुओं के साथ उपस्थित विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

देवगिरि प्रांत में धर्मप्रसार की प्रांतीय बैठक में उपस्थित धर्मप्रसार के प्रांतीय पदाधिकारी व कार्यकर्ता

इंदौर में धर्मप्रसार विभाग द्वारा मालवा प्रांत का प्रांतीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन

अशोकनगर में हुतात्मा दिवस पर नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण तथा रक्तदान शिविर का आयोजन

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.11.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

अमरकंटक (म.प्र.) में आयोजित विहिप-अ.भा. युवा संत चिंतन वर्ग के अवसर पर उपस्थित (बाएं से) विहिप अ.भा. धर्माचार्य संपर्क प्रमुख श्री अशोक तिवारी जी, केन्द्रीय अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी, पूज्य संत आत्मानंद पुरी जी महाराज, विहिप संरक्षक मा. दिनेशचन्द्र जी तथा (दाएं) देशभर से वर्ग में पधारे पूज्य संतगण।

विहिप वाराणसी कार्यालय के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराडे

रोटोरुआ (न्यूजीलैण्ड) के हिंदू हेरिटेज सेंटर में दीपावली उत्सव का आयोजन

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी-82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस-1, नई दिल्ली-110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी